कंफ्यूशियस

कन्यूशियस

मनीषा माथुर

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

भूमिका

जिस समय भारत में भगवान् महावीर और भगवान् बुद्ध धर्म के संबंध में नए विचार रख रहे थे, चीन में भी एक सुधारक का जन्म हुआ, जिसका नाम कन्फ्यूशियस था। उस समय चीन में झोऊ राजवंश का वसंत और शरत् काल चल रहा था। समय के साथ झोऊ राजवंश की शक्ति शिथिल पड़ने के कारण चीन में बहुत से राज्य कायम हो गए, जो सदा आपस में लड़ते रहते थे, जिसे 'झगड़ते राज्यों का काल' कहा जाने लगा। अत: चीन की प्रजा बहुत ही कष्ट झेल रही थी। ऐसे समय में चीनवासियों को नैतिकता का पाठ पढ़ाने हेतु महात्मा कन्फ्यूशियस का आविर्भाव हुआ।

उनका जन्म ईसा मसीह के जन्म के करीब 550 वर्ष पहले चीन के शानदोंग प्रदेश में हुआ था। बचपन में ही उनके पिता की मृत्यु हो गई। उनके ज्ञान की आकांक्षा असीम थी। बहुत अधिक कष्ट करके उन्हें ज्ञान-अर्जन करना पड़ा था। 17 व्रर्ष की उम्र में उन्हें एक सरकारी नौकरी मिली। कुछ ही वर्षों के बाद सरकारी नौकरी छोड़कर वे शिक्षण कार्य में लग गए। घर में ही एक विद्यालय खोलकर उन्होंने विद्यार्थियों को शिक्षा देना प्रारंभ किया। वे मौखिक रूप से विद्यार्थियों को इतिहास, काव्य और नीतिशास्त्र की शिक्षा देते थे। काव्य, इतिहास, संगीत और नीतिशास्त्र पर उन्होंने कई पुस्तकों की रचना भी की।

55 वर्ष की उम्र में वे लू राज्य में एक शहर के शासनकर्ता और बाद में मंत्री पद पर नियुक्त हुए। मंत्री होने के नाते उन्होंने दंड के बदले मनुष्य के चरित्र-सुधार पर बल दिया। कन्फ्यूशियस ने अपने शिष्यों को सत्य, प्रेम और न्याय का संदेश दिया। वे सदाचार पर अधिक बल देते थे। वे लोगों को विनयी, परोपकारी, गुणी और चरित्रवान् बनने की प्रेरणा देते थे। वे बड़ों एवं पूर्वजों का आदर-सम्मान करने के लिए कहते थे। वे कहते थे कि दूसरों के साथ वैसा बरताव न करो जैसा तुम स्वयं अपने साथ नहीं करना चाहते हो।

कन्फ्यूशियस एक सुधारक थे, धर्म-प्रचारक नहीं। उन्होंने ईश्वर के बारे में कोई उपदेश नहीं दिया, परंतु फिर भी बाद में लोग उन्हें धार्मिक गुरु मानने लगे। उनकी मृत्यु ई.पू. 489 में हो गई थी। कन्फ्यूशियस के समाज-सुधारक उपदेशों के कारण चीनी समाज में एक स्थिरता आई। कन्फ्यूशियस का दर्शन आज भी चीनी शिक्षा के लिए पथ प्रदर्शक बना हुआ है।

कन्फ्यूशियस के दार्शनिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विचारों पर आधारित मत को कन्फ्यूशियसवाद या कुंगफुल्सीवाद नाम दिया जाता है। कन्फ्यूशियस के मतानुसार, भलाई मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। मनुष्य को यह स्वाभाविक गुण ईश्वर से प्राप्त हुआ है। अत: इस स्वभाव के साथ काम करना ईश्वर की इच्छा का आदर करना है और उसके अनुसार कार्य न करना ईश्वर की अवज्ञा करना है।

कन्फ्यूशियसवाद के अनुसार समाज का संगठन पाँच प्रकार के संबंधों पर आधारित है—1. शासक और शासित, 2. पिता और पुत्र, 3. ज्येष्ठ भ्राता और कनिष्ठ भ्राता, 4. पति और पत्नी तथा 5. इष्ट मित्र।

इन पाँचों में से पहले चार संबंधों में एक ओर आदेश देना और दूसरी ओर उसका पालन करना निहित है। शासक का धर्म आज्ञा देना और शासित का कर्तव्य उस आज्ञा का पालन करना है। उसी प्रकार पिता, पति एवं बड़े भाई का धर्म आदेश देना है और पुत्र, पत्नी एवं छोटे भाई का कर्तव्य आदेशों का पालन करना है; परंतु साथ ही यह भी आवश्यक है कि आदेश देनेवाले का शासन औचित्य, नीति और न्याय पर आधारित हो। तभी शासित गण से भी यह आशा की जा सकती है कि वे विश्वास तथा ईमानदारी से आज्ञाओं का पालन कर सकेंगे। पाँचवें, अर्थात् मित्रों

के संबंध में पारस्परिक गुणों का विकास ही मूल निर्धारक सिद्धांत होना चाहिए।

कन्फ्यूशियसवाद की शिक्षा में धर्मनिरपेक्षता का सर्वांगपूर्ण उदाहरण मिलता है। कन्फ्यूशियसवाद का मूल सिद्धांत इस स्वर्णिम नियम पर आधारित है कि 'दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम उनके द्वारा अपने प्रति किए जाने की इच्छा करते हो।'

इस पुस्तक में कन्फ्यूशियस के जीवन और दर्शन का चित्रण किया गया है।

जन्म

कन्फ्यूशियस के जीवन को जानने का आरंभिक स्रोत सीमा कियान द्वारा रचित जीवनी ग्रंथ 'रेकॉर्ड्स ऑफ द ग्रांड हिस्टोरियन' को माना जाता है। कन्फ्यूशियस के देहांत के कई शताब्दी बाद रचित इस ग्रंथ में कन्फ्यूशियस के जीवन-प्रसंगों को 'किंवदंती' का रूप दिया गया है। यही वजह है कि कल्पना और वास्तविकता को अलग कर पाना कठिन हो जाता है।

माना जाता है कि कन्फ्यूशियस का जन्म ईसा पूर्व 551 में हुआ था। हालाँकि इस वर्ष को लेकर भी मतभेद रहा है और कुछ विद्वान् जन्म का वर्ष ईसा पूर्व 552 बताते रहे हैं। इतना तो निश्चित है कि उनका जन्म चीन के लू प्रांत में हुआ था, जो वर्तमान में शानडोंग प्रांत के कूफू नगर के पास का इलाका है। जन्म-स्थान के रूप में भी विद्वान् एकमत नजर नहीं आते और कई स्थानों को लेकर दावा किया जाता है कि कन्फ्यूशियस का जन्म वहीं हुआ था। सीमा कियान ने लिखा है कि उनका जन्म चांग पिंग जिले के चाऊ नगर में हुआ था। हालाँकि किसी को मालूम नहीं है कि वर्तमान में यह स्थान कहाँ पर है। वर्तमान में 'कन्फ्यूशियस की गुफा' को उनके जन्म-स्थान के रूप में प्रचारित किया जाता है, जो वास्तव में मिथक ही है। सच तो यह है कि दूसरे मनुष्यों की तरह कन्फ्यूशियस भी किसी घर में ही पैदा हुए थे।

सीमा कियान ने लिखा है कि कन्फ्यूशियस के पिता का नाम शूलियांग हे था। शूलियांग कोंग परिवार के एक सदस्य थे। यह परिवार सोंग प्रांत के कोंग गाँव से आया था, जो लू प्रांत के दक्षिण में स्थित था। अपने मूल पैतृक स्थान पर कोंग परिवार का संबंध राजपरिवार से था या वह परिवार अभिजात वर्ग का हिस्सा रहा था, यह बात इस तरह समझी जाती है कि गर्दिश के दिनों में भी इस परिवार के सदस्य के रूप में कन्फ्यूशियस ने विधिवत् शिक्षा प्राप्त की थी। कन्फ्यूशियस के परदादा सोंग नेताओं के साथ किसी बात पर हुए झगड़े के दौरान मारे गए थे और परिवार को मजबूर होकर उत्तर दिशा की तरफ स्थित लू प्रांत में पलायन करना पड़ा था।

मूल पैतृक स्थान को छोड़कर आने के बाद कोंग परिवार के सामने आजीविका का संकट उत्पन्न हो गया था। अनजान इलाके में अजनबी होने के कारण इस परिवार को तुरंत अभिजात वर्ग का हिस्सा बनने में कठिनाई हुई थी और एक छोटे नगर में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा था। ऐसी स्थिति में भी इस परिवार को अपना आभिजात्य बचाए रखने की चिंता बनी हुई थी।

माना जाता है कि कन्फ्यूशियस के पिता जीविका चलाने के लिए लू सरकार के किराए के सैनिक के रूप में काम कर रहे थे। अगर वे सत्ताधारी दल के सदस्य होते तो उन्हें सेना में स्थायी पद मिल सकता था।

एक युद्ध के दौरान लू की सेना की एक टुकड़ी वियांग नगर में घुसने की कोशिश कर रही थी, जो उस समय एक विद्रोही नेता के कब्जे में था। उसी समय सैनिकों को फँसाकर मारने के मकसद से विद्रोही नेता के सिपाही नगर के फाटक को बंद करने की कोशिश करने लगे। कन्फ्यूशियस के पिता ने दुश्मन की चाल को भाँप लिया और अकेले फाटक को पकड़कर उन्होंने लू के सैनिकों की जान बचा ली।

उनकी इस वीरता के पीछे निश्चित रूप से आजीविका की मजबूरी थी और एक ऐसे बहादुर सैनिक के पुत्र के रूप में एक महान् दार्शनिक का जन्म हो सकता था, इस बात की कल्पना करना अजीब लगता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कन्फ्यूशियस को आनुवंशिक रूप से अपनी माता से विशेष गुण प्राप्त हुए थे। कन्फ्यूशियस ने कभी सैन्य शक्ति की नृशंसता को स्वीकार नहीं किया और हमेशा हिंसा का विरोध करते रहे। उन्होंने हमेशा कहा कि मानवीय

करुणा के बिना बहादुरी पशुता के सिवाय कुछ और नहीं है और ऐसी बहादुरी पर गर्व नहीं किया जा सकता।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि कन्फ्यूशियस के पिता बहादुर थे। वैसे उनके भीतर मानवीय करुणा थी या नहीं, इसके संबंध में निश्चित जानकारी नहीं मिलती। वैसे, इतना तो तय है कि सैनिक के रूप में काम करते हुए उन्होंने कई लोगों की हत्या की थी। साहसपूर्ण कारनामों के बावजूद उन्हें कभी कोई शाही सम्मान या पारितोषिक नहीं प्रदान किया गया। निश्चित रूप से इस बात को लेकर उनके मन में असंतोष का भाव पैदा हुआ होगा और उन्होंने बुढ़ापे का वक्त क्षुब्ध होकर गुजारा होगा।

उन्हें रहने के लिए छोटा सा घर तत्कालीन सरकार ने दिया था और उस घर पर सरकार का ही स्वामित्व था। वैसी स्थिति में मरते वक्त अपने पुत्र को देने के लिए उनके पास कोई जायदाद नहीं थी।

उस युग में पुत्र का न होना अपमानजनक बात समझी जाती थी। कोंग शूलियांग की दो पत्नियाँ थीं और उन्हें कठिनाई के साथ जीविका का निर्वाह करना पड़ता था। दोनों पत्नियों ने बेटियों को जन्म दिया था। एक पुत्र पैदा हुआ, जो जन्म से ही विकलांग था। वह लँगड़ाकर चलता था। तत्कालीन नियमों के अनुसार न तो उसकी शादी हो सकती थी, न ही उसके बच्चे हो सकते थे। लगभग साठ वर्ष पूरे कर चुके शूलियांग को यह चिंता सताने लगी थी कि उनके मरने के बाद कोंग वंश का सिलसिला भी हमेशा के लिए समाप्त हो जाने वाला था। उनकी दूसरी पत्नी अब माँ बनने की उम्र पार कर चुकी थी। अब उनके सामने केवल एक ही रास्ता था कि किसी युवती की तलाश कर पुत्र-रत्न की प्राप्ति करने के लिए प्रयास किया जाए।

चीन की परंपरा के अनुसार, किसी भी वंश को चलाने की जिम्मेदारी बड़े पुत्र की होती थी। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि पुत्र का जन्म विवाहित पत्नी की कोख से हुआ हो या किसी पर-स्त्री की कोख से। जब वैध पत्नी से पुत्र की प्राप्ति नहीं होती थी, तब उपपत्नी का सहारा लेकर पुत्र को पैदा करने का रिवाज था। बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक यह परंपरा चलती रही थी।

सत्तर वर्ष की उम्र में शूलियांग ने एक युवती को ढूँढ़ निकाला, जो उनके उत्तराधिकारी को जन्म दे सकती थी। युवती का नाम यान झेंगझाई था और वह महज पंद्रह वर्ष की थी। सीमा कियान ने उसका 'विचित्र जोड़ा' के रूप में उल्लेख किया है। झेंगझाई एक प्रतिष्ठित परिवार की सुसंस्कृत लड़की थी। कई दस्तावेजों में बताया गया है कि वह 'विद्वानों के परिवार' में पैदा हुई थी, कन्फ्यूशियस ने स्वयं लिखा है—''पंद्रह साल की उम्र में मैं ज्ञानार्जन के प्रति आकर्षित हुआ।'' (एनालेक्ट्स 2:4)। ज्ञानार्जन के प्रति कन्फ्यूशियस के मन में जो आकर्षण पैदा हुआ, उसके पीछे उनकी माता और ननिहाल का गहरा प्रभाव था। उनकी माता ने ही उन्हें पाल-पोस कर बड़ा किया था (चूँकि जब वे तीन वर्ष के थे, तभी उनके पिता का देहांत हो गया था)। सवाल पैदा होता है कि विद्वानों के परिवार में पैदा होनेवाली लड़की एक वृद्ध की उपपत्नी बनने के लिए क्यों तैयार हो गई थी? ऐसा लगता है कि इसके पीछे आर्थिक वजह थी और शूलियांग ने झेंगझाई के परिवार के साथ किसी तरह की सौदेबाजी की थी। इसके संबंध में निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं है; किंतु इतना तो निश्चित ही है कि बाद में यह अनुबंध टूट गया था। जिस यान परिवार से झेंगझाई ताल्लुक रखती थी, वह भी कोंग परिवार की तरह दूसरे प्रांत से आकर बस गया था और उसी की तरह कठिनाइयों का सामना कर रहा था। निश्चित रूप से यान परिवार की आर्थिक कठिनाइयाँ ज्यादा थीं और वैसे हालात में ही झेंगझाई को उपपत्नी बनने के लिए विवश होना पड़ा था।

विद्या और संस्कृति की दृष्टि से संपन्न होने के बावजूद यान परिवार की सामाजिक हैसियत कोंग परिवार की तुलना में कमतर थी। यान परिवार झौ प्रांत से आया था, जो मूल झाऊ साम्राज्य की सीमा से बाहर स्थित था। उस

क्षेत्र को यी नाम से जाना जाता था। संघर्षरत राज्यों के काल में झौ लोगों के पास कोई राजनीतिक शक्ति नहीं थी, इसके बावजूद झौ साम्राज्य के क्षेत्र में रहनेवाले लोगों को 'बर्बर' कहकर पुकारा जाता था।

यही वजह थी कि यान झेंगझाई के परिवार को नए स्थान पर अपनी बर्बर छवि का खामियाजा भुगतना पड़ रहा था और अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा था। इस परिवार के सामने कोंग परिवार के किसी प्रस्ताव को ठुकराने का साहस नहीं था। शूलियांग ने जब झेंगझाई को उपपत्नी बनाकर संतानोत्पत्ति का प्रयास किया तो शुरू में कोई नतीजा नहीं निकला। इसके बाद दोनों नी की पवित्र पहाड़ी के पास जाकर पुत्र के लिए प्रार्थना करने लगे। ऐसा लगता है कि शूलियांग के परिवार के बाकी सदस्य झेंगझाई को जानते थे और असंतुष्ट होते हुए भी भावी उत्तराधिकारी के पैदा होने की राह देख रहे थे।

कुछ लेखकों ने वर्णन किया है कि शूलियांग ने अपनी दोनों पत्नियों से संबंध विच्छेद कर लेने के बाद झेंगझाई से विवाह कर लिया था। मगर यह वर्णन सत्य नहीं प्रतीत होता। चीन की तत्कालीन परंपरा के अनुसार शूलियांग ने तीसरी पत्नी की तरह झेंगझाई को अपने घर में रख लिया था। जब संतानोत्पत्ति के लिए परिवार में उपपत्नी को लाया जाता था तो पहले से मौजूद पत्नी का रुख सख्त हो जाता था। झेंगझाई को भी शूलियांग की दो पत्नियों की नफरत और शत्रुतापूर्ण व्यवहार का सामना करना पड़ा। शूलियांग की बेटियाँ भी झेंगझाई से नफरत करती थीं। उस परिवार में अध्ययन के लिए न पुस्तकें थीं, न ही संगीत की व्यवस्था थी। एक सैनिक परिवार के शुष्क वातावरण में पहुँचकर कम उम्र की झेंगझाई को काफी पीड़ा महसूस हुई थी। उसके पति को उससे किसी तरह का लगाव नहीं था और उसकी उपयोगिता सिर्फ यही थी कि वह अपने पति के लिए एक उत्तराधिकारी को जन्म दे सकती थी।

आखिरकार, ईसा पूर्व 571 के पूर्वार्द्ध में झेंगझाई गर्भवती हो गई थी। शूलियांग को तब अत्यंत प्रसन्नता हुई, जब झेंगझाई ने एक पुत्र को जन्म दिया। परंपरागत रूप से हर साल 28 सितंबर को कन्फ्यूशियस की जयंती मनाई जाती है। हालाँकि इस बात का कोई निश्चित प्रमाण मौजूद नहीं है कि इसी तारीख को उनका जन्म हुआ था। चीन के कैलेंडर के मुताबिक, हर वर्ष जयंती की तारीख में परिवर्तन भी होता रहता है।

यह भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि कन्फ्यूशियस का जन्म किस स्थान पर हुआ था। माना जा सकता है कि बालक का जन्म शूलियांग के घर में ही हुआ था, जो पुत्र-रत्न की प्राप्ति से अत्यंत प्रसन्न हुए थे। बालक का नाम 'क्यू' रखा गया, जिसका अर्थ है—'पवित्र पहाड़ी'। नी की पवित्र पहाड़ी से प्रार्थना करने के बाद ही बालक का जन्म हुआ था, संभवत: यही सोचकर बालक का नाम 'क्यू' रखा गया। परिवार के नाम 'कोंग' का अर्थ है—'प्रार्थना का उत्तर'। इस तरह कन्फ्यूशियस के संपूर्ण नाम 'कोंग क्यू' का अर्थ है—'पवित्र पहाड़ी पर की गई प्रार्थना का उत्तर'। यानी उनके नाम के साथ परिवार के नाम को जोड़कर गहरी अर्थवत्ता को उजागर किया गया था।

उत्तराधिकारी का जन्म होने के बाद शूलियांग को कितना गर्व महसूस हुआ था, इस बात को लेकर कई तरह की मान्यताएँ प्रचलित हैं। इस तरह की कई कहानियाँ प्रचलित रही हैं, जिनसे पता चलता है कि कुरूप बालक का जन्म होने पर परिवार के सदस्यों को हताशा का सामना करना पड़ा था। कुछ कहानियों में वर्णन मिलता है कि शूलियांग की नौ बेटियों ने नवजात बालक की बदसूरती का मजाक उड़ाया था।

इस तरह की अनेक कहानियाँ वास्तव में जनश्रुतियों का अंग ही प्रतीत होती हैं, मगर इनमें सत्य का अंश भी निहित है। निश्चित रूप से सौतेली बहनों ने बालक को शत्रुतापूर्ण नजरिए से देखा था, वहीं शूलियांग की दोनों पत्नियाँ यह देखकर जल-भुन गई थीं कि झेंगझाई ने सफलतापूर्वक शूलियांग के पुत्र को जन्म दे दिया था। जब उन्हें

खतरा महसूस होने लगा था कि कोंग क्यू ही परिवार का उत्तराधिकारी बनने वाला था और उनके विकलांग पुत्र को परिवार की संपत्ति का कोई हिस्सा नहीं मिलने वाला था, ऐसी परिस्थिति में दोनों पत्नियों ने अपनी बेटियों के साथ मिलकर साजिश रचते हुए झेंगझाई को घर से निकालने के लिए शूलियांग को भड़काना शुरू किया था।

इस तरह जल्द ही उनकी साजिश सफल हो गई थी।

❑

बचपन

विभिन्न लेखकों के वर्णन से स्पष्ट होता है कि पुत्र का जन्म होने के तीन वर्ष के भीतर ही झेंगझाई कोंग परिवार को छोड़कर चली गई थी। वह अपने साथ अपने पुत्र को लेकर गई थी और उसने शूलियांग और उसके परिवार के साथ सारा संपर्क खत्म कर दिया था। असल में इसके पीछे क्या वजह थी?

इस बात को लेकर कई तरह के अनुमान लगाए जा सकते हैं। हो सकता है कि शूलियांग ने झेंगझाई के परिवार से जो वादा किया था, उसे बाद में पूरा नहीं किया हो या शूलियांग की पत्नियों और बेटियों ने शूलियांग को भड़काकर झेंगझाई को घर छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया हो और अपने विकलांग पुत्र को उत्तराधिकारी बनाने में सफलता हासिल कर ली हो। कारण चाहे जो भी रहा हो, कन्फ्यूशियस के जन्म के तीन साल बाद जब उनके पिता का निधन हुआ, उस समय तक उनके पिता के परिवार का कोई संबंध उनकी माता और उनके साथ नहीं रह गया था। सीमा कियान के वर्णन से भी पता चलता है कि कन्फ्यूशियस और उनकी माता को इस बात की जानकारी नहीं थी कि शूलियांग को किस स्थान पर दफनाया गया था। जब झेंगझाई का निधन हुआ तो उसे अपने पति की समाधि के बगल में नहीं दफनाया गया, बल्कि उसे कूफू के पास 'पाँच पिताओं के मार्ग' के किनारे दफनाया गया।

कन्फ्यूशियस जब तीन वर्ष के थे, तभी उनके पिता का निधन हुआ, इसलिए स्वाभाविक है कि उन्हें अंत्येष्टि की कोई जानकारी नहीं थी; किंतु उनकी माता अगर उस समय कोंग परिवार में मौजूद रहती तो जरूर मालूम होता कि उसके पति को कहाँ दफनाया गया था। शूलियांग की समाधि के संबंध में माता और पुत्र की अनभिज्ञता के संबंध में सीमा कियान या अन्य जीवनीकारों ने स्पष्ट रूप से कुछ नहीं लिखा है। हम केवल अनुमान के आधार पर ऐसा मान सकते हैं कि जिस समय कन्फ्यूशियस के पिता का देहांत हुआ, उस समय वे कोंग परिवार में मौजूद नहीं थे। यानी उनका पालन-पोषण अपने पिता के परिवार में नहीं, बल्कि अन्यत्र किया गया।

वह कौन सा स्थान रहा होगा? इतना तो निश्चित है कि झेंगझाई अपने पुत्र को साथ लेकर मायके लौट आई थी, क्योंकि उस युग में एक अकेली स्त्री अपने बलबूते पर बच्चे का पालन-पोषण नहीं कर सकती थी। यान परिवार कूफू नगर के पास किसी स्थान पर रहता था और कन्फ्यूशियस के पिता का घर वहाँ से दूर था, क्योंकि झेंगझाई के आने के बाद दोनों परिवारों के बीच किसी तरह का संपर्क नहीं रह गया था।

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, यान परिवार विद्या और संस्कृति के प्रति समर्पित था। भले ही परिवार की माली हालत बहुत अच्छी नहीं थी। इस तरह के विवरण भी मिलते हैं कि कन्फ्यूशियस को अत्यंत निर्धनता के वातावरण में बचपन गुजारना पड़ा; किंतु इन वर्णनों को हम अतिशयोक्तिपूर्ण ही समझ सकते हैं, जो जनश्रुतियों के आधार पर प्रस्तुत किए गए हैं। उनकी माता उनके मन में ज्ञानार्जन के लिए लगाव पैदा कर पाई थी। अध्ययन, संगीत और पारंपरिक अनुष्ठानों के प्रति उनके मन में जिज्ञासा का भाव पैदा किया था। अगर कन्फ्यूशियस के ननिहालवाले दाने-दाने के लिए मोहताज होते तो वैसे माहौल में इस तरह विद्यार्जन की प्रवृत्ति उनके भीतर नहीं पैदा हो सकती थी।

निश्चित रूप से यान परिवार के पास गुजारा चलाने के लिए पर्याप्त साधन मौजूद थे। वह परिवार मिट्टी से निर्मित घर में रहता था। घर के सामने आँगन था। घर की छत लकड़ी से बनाई गई थी और चारों तरफ लकड़ी के खूँटों का प्रयोग किया गया था। आँगन में मुरगियाँ टहलती थीं और पास ही तालाब में बतखों का झुंड तैरता रहता था। घर के भीतर एक कमरा ऐसा जरूर था, जहाँ ढेर सारी पुस्तकें मौजूद थीं। वहीं एक कमरे को पूजा-गृह का

स्वरूप प्रदान किया गया था।

असल में एक भावी दार्शनिक के लिए यह एक आदर्श वातावरण था, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के आरंभिक वर्ष व्यतीत किए। अगर उनका आरंभिक जीवन कहीं गुजरा होता तो वह दार्शनिक नहीं बन सकते थे। अगर उनका जन्म किसी अमीर और प्रभावशाली परिवार में हुआ होता तो संभवत: उनके लिए सत्ताधारी वर्ग की कमजोरियों की पहचान कर पाना संभव नहीं हो सकता था। दूसरी तरफ, अगर उनकी माता मायके लौटने की जगह कोंग परिवार में ही रह गई होतीं तो विद्या के प्रति यान वंश के लगाव की भावना वह अपने पुत्र के मन में नहीं पैदा कर सकती थीं। कोंग परिवार में विद्या के अनुकूल वातावरण नहीं था। अगर कन्फ्यूशियस के पिता अधिक दिनों तक जीवित रहते तो वे भी अपनी तरह बेटे को सेना में भरती कराने का प्रयास करते।

यह कन्फ्यूशियस का सौभाग्य था कि उनकी माता ने उनका पालन-पोषण यान परिवार में रहकर करने का फैसला किया था। इस तरह उन्हें बचपन में भिन्न प्रकार का वातावरण मिल पाया था। बालक के रूप में कन्फ्यूशियस सेना से संबंधित खेल खेलने की जगह 'अनुष्ठान' से संबंधित खेलों में रुचि लेने लगे थे। ज्यादातर जीवनीकारों ने लिखा है कि बचपन में वे पवित्र पात्रों को परंपरागत रीति से सजाने में घंटों व्यस्त रहते थे और इस बात को लेकर परवर्ती समय में अनगिनत चित्र भी बनाए गए।

मिट्टी या पीतल के निर्मित पात्रों का इस्तेमाल विभिन्न पारिवारिक पूजा-अनुष्ठानों के दौरान किया जाता था। उस युग में पात्रों के अवशेषों को बरामद किया गया है और चीन समेत दुनिया भर के कई संग्रहालयों में सुरक्षित रखा गया है। इन पात्रों में पूजा के निमित्त गोश्त को पकाया जाता था या बलि चढ़ाए गए पशु के रक्त को इन पात्रों में रखा जाता था। इस तरह के अनुष्ठान प्राचीनकाल से प्रचलित थे। बचपन में कोंग क्यू जिन अनुष्ठानों का अनुकरण करने की कोशिश करते थे, उन्होंने अपनी आँखों से अपने नाना या मामा को उस तरह के अनुष्ठानों को संपन्न करते हुए देखा था।

उस युग में धर्म का संगठित स्वरूप प्रचलित नहीं था। विभिन्न पवित्र स्थानों पर बने हुए मंदिरों में लोग आराधना करते थे; मगर उस युग के दस्तावेजों में उन मंदिरों की शक्तियों का कोई उल्लेख नहीं मिलता। उस युग में प्रत्येक परिवार के मुखिया की जिम्मेदारी होती थी कि अनुष्ठानों को सही तरीके से संपन्न करे। ईश्वर या अप्रत्यक्ष शक्ति के संबंध में कई तरह की मान्यताएँ प्रचलित थीं। फसल के देवता को 'हौ जी' कहा जाता था। इसी तरह रसोई के देवता अलग थे। मगर इन मान्यताओं का कोई संगठित स्वरूप मौजूद नहीं था। इन देवताओं के अलावा परिवारों के पूजा-गृहों में पूर्वजों की आत्माओं का भी सम्मान किया जाता था।

घर से बाहर प्रकृति की शक्तियों की भी दैवी शक्ति के रूप में आराधना की जाती थी। हवा, वर्षा, बिजली, बादल, बाढ़ आदि को ईश्वर की शक्ति के रूप में ही देखा जाता था। कन्फ्यूशियस के समय में रहस्यपूर्ण ताओ धर्म काफी लोकप्रिय हो रहा था; मगर यान परिवार, जिसमें कन्फ्यूशियस भी शामिल थे, पूरी तरह परंपरावादी था। बाद के वर्षों में कन्फ्यूशियस ने अपनी सूक्तियों में रहस्यवाद की खिल्ली उड़ाते हुए उसे अकर्मण्यता का नमूना बताया और 'मृत्यु के बाद जीवन' जैसी शंकाओं को समय की बरबादी कहा, क्योंकि ऐसे सवालों का जवाब ढूँढ़ पाना कभी संभव नहीं हो सकता था—

''जी लू ने आत्माओं की आराधना करने के बारे में पूछा।

कन्फ्यूशियस ने कहा—अगर तुम मनुष्यों की आराधना ठीक से नहीं कर सकते तो आत्माओं की आराधना कैसे कर सकते हो?

लू ने कहा—क्या मैं मृत्यु के बारे में सवाल पूछ सकता हूँ?

कन्फ्यूशियस ने कहा—अगर तुम जीवन का मतलब ठीक से समझ नहीं सकते तो मृत्यु का मतलब कैसे समझ सकते हो?''

—एनालेक्ट्स 110:12

बालक के रूप में कन्फ्यूशियस धार्मिक प्रवृत्ति के थे और पवित्र पात्रों के प्रति उनका आकर्षण उनके लिए आध्यात्मिक अनुभव की जगह सांस्कृतिक व सामाजिक अनुभव से पैदा हुआ था।

ऐसा लगता है कि यान परिवार में ढेर सारी किताबें मौजूद थीं। यान परिवार के पुस्तकालय का गहरा प्रभाव बालक कन्फ्यूशियस पर पड़ा था और पुस्तकों की सहायता से उन्हें जीवन-निर्माण करने की प्रेरणा मिली थी। बाद में उन्होंने अपने शिष्यों को बताया था कि बचपन में वे कितनी गंभीरता से पुस्तकों का अध्ययन करते थे। इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने कम उम्र में ही अध्ययन की शुरुआत कर दी थी। ऐसा लगता है कि उनकी माता या किसी मामा ने बचपन में उनको वर्णमाला सिखाई थी और फिर पुस्तकों को पढ़ना सिखाया था।

यान परिवार के पास उस समय के पाँच महान् ग्रंथ मौजूद रहे होंगे। 'अनुष्ठानों की पुस्तक' में जहाँ अनुष्ठानों के संबंध में नियम बताए गए हैं, वहीं सदाचार की शिक्षा भी दी गई है। इस तरह की शिक्षा ने कन्फ्यूशियस के सिद्धांतों का आगे चलकर निर्माण किया। 'इतिहास की पुस्तक' में झाउ वंश और शांग युग की घटनाओं का वर्णन किया गया है। कन्फ्यूशियस इतिहास के अच्छे जानकार थे और अपने तर्कों के पक्ष में हमेशा ऐतिहासिक घटनाओं का उदाहरण देना पसंद करते थे। इसका अर्थ है कि जीवन के आरंभिक वर्षों में ही उन्होंने इस पुस्तक का अध्ययन कर लिया था।

'परिवार की पुस्तक' ज्योतिषशास्त्र से संबंधित थी, जिसकी सहायता से भविष्यवाणी की जाती थी। साठ वर्ष की उम्र से पहले कन्फ्यूशियस ने इस पुस्तक में कोई दिलचस्पी नहीं ली थी। इससे पता चलता है कि बचपन में उन्होंने इस पुस्तक का अध्ययन नहीं किया था।

परिवार के पास 'संगीत की पुस्तक' भी जरूर रही होगी। यान परिवार में संगीत को विशेष अहमियत दी जाती थी और उसी माहौल में पलने-बढ़ने के कारण कन्फ्यूशियस के मन में संगीत के प्रति लगाव का भाव पैदा हुआ होगा। कन्फ्यूशियस चीनी सितार बजाने में दक्ष थे और 'एनालेक्ट्स' में उनकी इस दक्षता का कई बार उल्लेख किया गया है। 'संगीत की पुस्तक' बाद में लुप्त हो गई; मगर इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि कन्फ्यूशियस के समय में यह पुस्तक मौजूद थी।

पाँच महान् ग्रंथों में कन्फ्यूशियस के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पुस्तक 'गीत की पुस्तक' थी। इस पुस्तक में झाउ वंश की संपूर्ण संस्कृति को दरशानेवाली कविताओं और लोकगीतों का संकलन किया गया था। यह कन्फ्यूशियस की प्रिय पुस्तक थी। उन्होंने अपने उपदेशों में इस पुस्तक के उद्धरणों का अनेक बार प्रयोग किया है। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने उस पुस्तक के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपने जीवन के अंतिम वर्षों में उन्होंने उसका संपादन किया। संपादन के दौरान उन्होंने कुल तीन हजार कविताओं में से सर्वश्रेष्ठ तीन सौ कविताओं का चयन किया। यह संचयन वर्तमान युग में भी उपलब्ध है।

कन्फ्यूशियस के युग में संगीत की शिक्षा को उतनी ही अहमियत दी जाती थी, जितनी साहित्य या गणित की शिक्षा को दी जाती थी। यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि बचपन में कन्फ्यूशियस जो संगीत की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे, वह उनके लिए महज शौक नहीं था बल्कि संसार के प्रति उनके दृष्टिकोण का एक अभिन्न अंग था। उन्होंने बाद

में अपने उपदेश में कहा कि संगीत की सहायता से सामाजिक एवं मानसिक शांति हासिल की जा सकती है। वहीं कोई कूरर व्यक्ति हृदय को छूनेवाले संगीत को उत्पन्न नहीं कर सकता—

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''अगर किसी व्यक्ति के हृदय में मानवीय गुण नहीं हैं तो संगीत कैसे उत्पन्न कर पाएगा?''

—एनालेक्ट्स 3:3

सभी जीवनीकारों ने लिखा है कि कन्फ्यूशियस का बचपन नगर की जगह गाँव में ही व्यतीत हुआ था। पढ़ाई-लिखाई सीखने के साथ-साथ चीनी सितार बजाते हुए वे ग्रामीण जीवन के आनंद को महसूस कर रहे थे। नदियों में जाकर मछली पकड़ते हुए, खेतों में घूमते हुए, जंगल में खेलते हुए बालक कन्फ्यूशियस ने प्रकृति का साक्षात्कार किया था।

❑

द्यार्जन

जब कन्फ्यूशियस ने किशोरावस्था में कदम रखा तो उनकी माता को उनके भविष्य की चिंता सताने लगी।

कन्फ्यूशियस लंबे और हृष्ट-पुष्ट किशोर थे, जो कृषि कार्यों में हाथ बँटाने लगे थे। यान परिवार सुअर-पालन करता था और सीमित कृषि भूमि में अनाज तथा सब्जियों की खेती करता था। कपास की खेती कर वस्त्र तैयार किए जाते थे। कन्फ्यूशियस हमेशा किसी-न-किसी कार्य में व्यस्त रहते थे। बाड़ लगाने का काम हो या कच्ची ईंट से दीवारें बनाने का काम हो—इस तरह के सभी कार्यों में जुटे रहना उन्हें अच्छा लगता था। अगर उनका संबंध किसी अमीर परिवार से होता तो उस उम्र में उन्हें इस तरह के कार्य करने की जरूरत महसूस नहीं होती, क्योंकि ऐसे कार्य करने के लिए नौकर-चाकर मौजूद रहते। यान परिवार इतना खुशकिस्मत नहीं था और उसके पास गिने-चुने नौकर ही मौजूद थे, इसलिए परिवार के सभी सदस्य कृषि के कार्यों में हाथ बँटाते थे।

''तरुणाई में मेरा परिवार निर्धन था, इसलिए मुझे कई सामान्य कार्यों को सीखना पड़ा।''

—एनालेक्ट्स 9:6

झेंगझाई नहीं चाहती थी कि उसका पुत्र जीवन भर इसी तरह के कार्य करता रहे। हालाँकि कोंग परिवार में पैदा होने के नाते किशोर कोंग क्यू संभ्रांत वर्ग के निचले दर्जे (जिसे 'शी' कहा जाता था) से संबंधित होने का दावा कर सकते थे और उसी के अनुरूप सुविधाएँ प्राप्त कर सकते थे; मगर दस वर्षों से कोंग और यान परिवार के बीच किसी तरह का संबंध नहीं रह गया था। वैसे भी, उनके पिता का परिवार उतना प्रभावशाली नहीं था और ज्यादा-से-ज्यादा उन्हें सेना की नौकरी दिलवा सकता था।

उनकी माता के परिवार की सामाजिक हैसियत तो और भी कमतर थी। यह परिवार भले ही 'शी श्रेणी' का दावा करता था, मगर अपने प्रभाव से कोंग क्यू को कोई सरकारी नौकरी या सेना की नौकरी नहीं दिलवा सकता था। झेंगझाई सिर्फ यही अपेक्षा रख सकती थी कि उसके पुत्र को किसी सामंत के सहायक कर्मचारी की नौकरी मिल सकती थी। ऊँचा पद नहीं मिल सकता था, किंतु निचले स्तर पर कोई काम जरूर मिल सकता था।

लेकिन इस तरह की नौकरी हासिल करने के लिए भी किशोर कोंग क्यू का शिक्षित होना जरूरी था। उनके लिए शिक्षा का प्रबंध कर पाना यान परिवार के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य था। उस युग में इस तरह के विद्यालयों का कोई अस्तित्व नहीं था, जहाँ छात्रों को दाखिला दिया जा सके, न ही निजी तौर पर अध्यापन करनेवाले शिक्षक मौजूद थे। जो भी शिक्षक थे, वे किसी-न-किसी राजपरिवार के साथ जुड़े हुए थे। काफी कोशिश करने के बाद कन्फ्यूशियस के मामा ने जी राजपरिवार से अनुरोध करते हुए उसी राजपरिवार के साथ जुड़े अध्यापकों के सान्निध्य में कन्फ्यूशियस के विद्यार्जन का प्रबंध कर दिया। ऐसा करते हुए शर्त यह रखी गई कि शिक्षा प्राप्त करने के बाद कन्फ्यूशियस को जी सुन उर्फ राजाजी की सेवा करनी पड़ेगी। ऐसा लगता है कि यान परिवार ने शिक्षा प्राप्त करने के बाद जी राजपरिवार की सेवा में कन्फ्यूशियस को जीवन भर तैनात करने का वचन दे दिया था।

इस तरह चौदह या पंद्रह साल की उम्र में कोंग क्यू को जी राजपरिवार के महल में ले जाया गया, जहाँ उन्हें अगले तीन वर्षों तक रहते हुए विद्यार्जन करना पड़ा। इस दौरान वे छह महीने के अंतराल पर फसल की कटाई और नव वर्ष के उत्सव के अवसर पर अपनी माँ के पास लौट पाते थे। उनकी हैसियत अनुकंपा के आधार पर शिक्षा प्राप्त करनेवाले विद्यार्थी की थी। उनकी साधारण पोशाक से उनकी गरीबी झलकती थी, वहीं राजपरिवार के समृद्ध छात्र उनका मजाक उड़ाते थे और उन्हें उपहास की नजर से देखते थे। निश्चित रूप से शुरुआत में उन्हें अध्ययन

प्राप्त करना पीड़ादायक प्रतीत हुआ था, जैसाकि उन्होंने बाद में कहा भी।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''असंतोष के बिना गरीब होना कठिन है। आक्रामकता के बिना धनी होना आसान है।''

—एनालेक्ट्स 14:10

विद्यार्जन करनेवाले कई छात्रों की हैसियत कन्फ्यूशियस जैसी ही थी, मगर सबसे अधिक निर्धन कन्फ्यूशियस ही थे। जी राजपरिवार में प्रचलित शिक्षा-प्रणाली दो श्रेणियों में विभाजित थी। पहली श्रेणी की विशिष्ट शिक्षा केवल राजपरिवार के छात्रों के लिए ही थी। वहीं दूसरी श्रेणी की शिक्षा साधारण वर्ग के ऐसे छात्रों के लिए थी, जिन्हें भविष्य में राजकर्मचारी, भंडार गृह निरीक्षक, मंदिर निरीक्षक, पशुसंपत्ति निरीक्षक आदि पदों पर नौकरी करनी थी। ये सामान्य छात्र भले ही 'शी' वर्ग के शिक्षित सदस्य बन जाते थे, किंतु शासकों की सेवा करना ही उनकी नियति थी। उन्हें राजपरिवार के छात्रों के सामने झुककर ही रहना पड़ता था और उनके लिए अपनी अलग पहचान बना पाना आसान नहीं था।

'शी' वर्ग या सामान्य छात्रों की श्रेणी में कन्फ्यूशियस भी शामिल थे और अपनी श्रेणी के भीतर भी उनकी हैसियत सबसे निर्धन छात्र के रूप में थी। उन्हें अपनी हैसियत का एहसास हमेशा बना रहता था।

परंपरागत रूप से प्रचलित एक प्रसंग का वर्णन कई पुस्तकों में मिलता है, जिसमें बताया गया है कि जब छात्रों का अध्ययन पूरा हो गया तब राजाजी ने अपने दरबार में एक दीक्षांत समारोह का आयोजन किया। जब कन्फ्यूशियस इस समारोह में भाग लेने के लिए आए तो प्रवेश द्वार पर तैनात प्रहरी ने उन्हें अंदर जाने से मना कर दिया। प्रहरी ने कहा, ''क्षमा करें महोदय, सिर्फ राजपरिवार के सदस्य ही अंदर जा सकते हैं।'' कन्फ्यूशियस ने सिर हिलाया और मुसकराते हुए वापस लौट गए।

सीमा कियान ने लिखा है कि जिस प्रहरी ने कन्फ्यूशियस को अंदर जाने से मना कर दिया, उसका नाम यांग हुओ था, जो राजाजी का प्रधान कर्मचारी था। वह अपने मालिक का विश्वस्त एवं वफादार सेवक था, वहीं वह अपने मातहतों के साथ अत्यंत बेरहमी के साथ पेश आता था। सीमा कियान ने यह भी लिखा है कि यांग हुओ का हुलिया कन्फ्यूशियस से मिलता-जुलता था और कई वर्षों के बाद सैनिकों ने कन्फ्यूशियस को यांग हुओ समझकर गिरफ्तार कर लिया था। चूँकि यान वंश से दोनों जुड़े थे, इसलिए संभव है कि यांग हुओ की सहायता से ही जी राजपरिवार में कन्फ्यूशियस की नियुक्ति हुई थी।

युवावस्था में कन्फ्यूशियस को इस तरह कई बार अपमानजनक बरताव का सामना करना पड़ा था। शायद यही वजह है कि उनके मन में अवसर की समानता के प्रति आस्था दृढ़ होती गई थी और आगे चलकर उन्होंने इसी बिंदु पर अपने सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार भी किया।

दूसरी श्रेणी के छात्रों को भले ही दीक्षांत समारोह में शामिल होने की इजाजत नहीं दी जाती थी, किंतु अध्ययन, लेखन और गणित की दक्षता उनके लिए जरूरी मानी जाती थी, चूँकि ऐसी दक्षता के सहारे ही वे नौकरी के दायित्वों को पूरा कर सकते थे। पाठ्यक्रम में अनुष्ठानों का अध्ययन, इतिहास, कविता, अध्यात्म के अलावा तीरंदाजी और रथ-संचालन की शिक्षा को भी शामिल किया गया था। ऐसा लगता है कि साधारण श्रेणी के छात्र होने के कारण कन्फ्यूशियस को भद्रजन की क्रीड़ा में शामिल होने की अनुमति नहीं दी गई थी या उन्हें इस तरह की क्रीड़ा में रुचि नहीं थी। वे हमेशा ग्रंथों का अध्ययन करने में अधिक रुचि लेते थे। जीवन में बाद के वर्षों में जब उनकी आलोचना की गई कि उनके पास भद्रजन की विशिष्टताएँ नहीं थीं तो उन्होंने मजाक के लहजे में कहा था कि तीरंदाजी और रथ-संचालन की विद्या उन्हें नहीं आती थी, मगर रथ-संचालन करना कभी भी सीखा जा सकता

था।

डेक्सियांग के एक आदमी ने कहा, ''कन्फ्यूशियस कितना ज्ञानी है! वह हर चीज के बारे में इतना अधिक जानता है। मगर मैंने सुना नहीं कि उसने कभी कोई दक्षता हासिल की हो।''

जब कन्फ्यूशियस को इस बात की जानकारी मिली तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, ''मुझे क्या सीखना चाहिए? क्या मुझे रथ हाँकना सीखना चाहिए? मुझे तीरंदाजी सीखनी चाहिए? मुझे लगता है कि मैं रथ हाँकना सीख सकता हूँ।''

—एनालेक्ट्स 9:2

कन्फ्यूशियस ने रथ हाँकना नहीं सीखा था; किंतु ऐसा माना जा सकता है कि उन्होंने पढ़ाई करते समय तीरंदाजी का थोड़ा-बहुत अभ्यास जरूर किया था, क्योंकि एक बार उन्होंने एक ऐसी क्रीड़ा का उल्लेख किया, जिसके लिए तकनीकी जानकारी का होना जरूरी था (अपनी सूक्ति में उन्होंने बताया कि किसी भी क्षेत्र में पाशविक शक्ति की तुलना में दक्षता की अहमियत ज्यादा होती है)।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''तीरंदाजी के दौरान लक्ष्य पर बनाए गए चमड़े के आवरण को भेदना महत्त्वपूर्ण नहीं होता, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की ताकत में अंतर होता है। प्राचीनकाल से ऐसा ही होता रहा है।''

—एनालेक्ट्स 3:16

ऐसा लगता है कि अपने अध्ययनकाल की स्मृति के आधार पर उन्होंने यह बात कही थी। उन्होंने देखा होगा कि चमड़े के आवरण को तीर से भेदने के बाद राजपरिवार के छात्रों की सराहना अध्यापक करते थे, क्योंकि उन छात्रों को भविष्य में सेना का अधिकारी बनना था। उन्होंने देखा होगा कि राजपरिवार के छात्र किस तरह महज निशाने को स्पर्श करने की जगह निशाने को बलपूर्वक क्षत-विक्षत करने में अधिक दिलचस्पी लेते थे।

तीरंदाजी भद्रजन की एक ऐसी क्रीड़ा थी, जिसे कन्फ्यूशियस अपनी स्वीकृति देते थे। उन्होंने अध्ययनकाल में तीरंदाजी की कई प्रतियोगिताएँ देखी थीं। इन प्रतियोगिताओं के साथ संगीत के कार्यक्रम भी होते थे और पारंपरिक अनुष्ठान भी। इन प्रतियोगिताओं में व्यक्ति की शारीरिक ताकत की बजाय दक्षता और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा पर अधिक बल दिया जाता था।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''श्रेष्ठ व्यक्ति को किसी बात के लिए होड़ नहीं करनी पड़ती। अगर उसे होड़ करनी पड़ती है तो वह तीरंदाजी की प्रतियोगिता में भाग लेता है, जहाँ वह निष्पक्ष बना रहता है। वह इस प्रतियोगिता में परंपरागत पेय पदार्थ पीता है। ऐसी प्रतियोगिता श्रेष्ठ व्यक्तियों के लिए होती है।''

—एनालेक्ट्स 3:7

कन्फ्यूशियस ने जीवन भर श्रेष्ठ खिलाड़ी की खूबियों की सराहना की—

''जब आचार्य मछली पकड़ने गए तो उन्होंने जाल का प्रयोग नहीं किया। जब वे शिकार करने गए तो उन्होंने किसी पंछी की हत्या नहीं की।''

—एनालेक्ट्स 7:27

इन तमाम गतिविधियों के बीच अध्ययन के लिए पर्याप्त समय मिल जाता था। बाँस की खपच्चियों से बनी पुस्तकों को रखने के लिए जो पुस्तकालय बनाया गया था, उसका आकार वर्तमान युग के पुस्तकालय की तुलना में निश्चित रूप से बड़ा था। वहीं कन्फ्यूशियस एकाग्र होकर पुस्तकों का अध्ययन किया करते थे। हम उस दृश्य की कल्पना कर सकते हैं कि जब दूसरे छात्र तीरंदाजी का अभ्यास करते थे, तब पुस्तकालय के एक कोने में बैठकर

किस तरह कन्फ्यूशियस पुस्तक का अध्ययन करते थे। इसका अर्थ यह नहीं था कि वे अलग-थलग और एकाकी थे, किंतु उन्होंने सामंती वातावरण में किसी झुंड का हिस्सा बनने से इनकार कर दिया था। उन्होंने ऐसे छात्रों को अपना मित्र बनाना पसंद किया, जिनकी रुचियाँ उनकी रुचियों से मिलती-जुलती थीं।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''श्रेष्ठ व्यक्ति के पास मित्र होते हैं, मगर श्रेष्ठ व्यक्ति किसी गिरोह का हिस्सा नहीं होता।''

—एनालेक्ट्स 15:22

कन्फ्यूशियस ने कहा—''अगर आप गुणी हैं तो आप कभी अकेले नहीं रहेंगे। आपके पास हमेशा मित्र मौजूद रहेंगे।''

—एनालेक्ट्स 4:25

अध्ययन काल में उनकी दोस्ती एक ऐसे छात्र से हो गई, जो राजपरिवार से संबंधित था। उसका नाम नांगोंग जिंग्सू था। लू राज्य के एक अन्य ताकतवर सामंत मेंग का सबसे छोटा बेटा नांगोंग था, जो अपने भाई के साथ राजाजी के महल में कन्फ्यूशियस के सहपाठी के रूप में अध्ययन कर रहा था। सीमा कियान ने लिखा है कि जब कन्फ्यूशियस महज उन्नीस साल के थे, उसी समय नांगोंग और उसके भाई ने अनुष्ठानों की शिक्षा उनसे ग्रहण की थी। कन्फ्यूशियस ने तीस साल की आयु से पहले अध्यापन का कार्य आरंभ नहीं किया था, इसलिए यह वर्णन विश्वसनीय नहीं लगता।

राजपरिवार से संबंध रखनेवाले सारे छात्र रथ हाँकने, तीरंदाजी और युद्ध विद्या में सबसे ज्यादा दिलचस्पी रखते थे और अन्य विषयों में पढ़ाई को अहमियत देना जरूरी नहीं समझते थे; क्योंकि वे जानते थे कि क्षमता हासिल करने के बाद वे शी वर्ग के कर्मचारियों के परामर्श से राज-काज चला सकते थे या अनुष्ठानों को संपन्न कर सकते थे। अकसर अनुष्ठानों की कक्षा में वे सोना पसंद करते थे।

लेकिन कन्फ्यूशियस का नया मित्र नांगोंग जिंग्सू राजपरिवार के अन्य छात्रों से अलग था। नांगोंग को झोउ अनुष्ठानों में विशेष दिलचस्पी थी और बाद में इस विषय का अध्ययन करने के लिए कन्फ्यूशियस को झोउ की राजधानी की यात्रा पर भेजने का सारा प्रबंध किया था। वह जीवन भर कन्फ्यूशियस का विश्वस्त मित्र बना रहा और उसने कन्फ्यूशियस को विद्यालय शुरू करने के लिए सहायता उपलब्ध कराई। नांगोंग जिंग्सू के बिना कन्फ्यूशियस के लिए श्रेष्ठ उपलब्धियाँ हासिल कर पाना मुमकिन नहीं हो सकता था।

अध्ययन समाप्त होने पर नांगोग जिंग्सू मेंग राजपरिवार के प्रशासनिक दायित्व निभाने के लिए लौट गया। वहीं उन्नीस वर्षीय कन्फ्यूशियस को अपने परिवार के वादे के मुताबिक राजाजी के कर्मचारी की नौकरी स्वीकार करनी पड़ी।

यही वह समय था, जब कन्फ्यूशियस अपनी पहचान बनाने के लिए कदम बढ़ा रहे थे; मगर इसी समय महज बत्तीस साल की उम्र में ही उनकी माता झेंगझाई का देहावसान हो गया।

❑

शोक के तीन साल

कई लेखकों ने लिखा है कि अपने देहांत से ठीक पहले कन्फ्यूशियस की माता ने अपने बेटे के लिए भी परिवार की एक युवती को भावी पत्नी के रूप में चुन लिया था। यह तथ्य सही प्रतीत होता है, क्योंकि उसी समय कन्फ्यूशियस नौकरी शुरू करने वाले थे और गृहस्थी बसाने का वक्त आ गया था। सीमा कियान ने लिखा है कि जिस समय झेंगझाई की मृत्यु हुई, उस समय कन्फ्यूशियस सत्रह साल के थे। चूँकि शोक की अवधि तीन वर्षों की थी, इसलिए कन्फ्यूशियस को अपना विवाह तीन वर्षों तक स्थगित रखना पड़ा था।

कुछ लोगों ने शोक की अवधि तीन वर्ष से घटाकर एक वर्ष निश्चित करने की सलाह दी थी; मगर कन्फ्यूशियस इस सलाह को मानने के लिए तैयार नहीं हुए। इस विषय को लेकर उन्होंने अपने विचार इस तरह व्यक्त किए थे—
''जाई वो ने कहा कि माता-पिता के देहांत के बाद तीन वर्षों तक शोक मनाने की जगह एक वर्ष तक शोक मनाना ठीक रहेगा।''

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''अगर तुम्हारे साथ ऐसा हो तो क्या एक वर्ष बाद स्वादिष्ट व्यंजन खाना और रंग-बिरंगी पोशाक पहनना तुम्हें अच्छा लगेगा?''
''मुझे अच्छा लगना चाहिए।'' वो ने जवाब दिया।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''अगर तुम्हें अच्छा लगेगा तो वैसा ही करो। मगर एक श्रेष्ठ व्यक्ति शोक की अवधि में स्वादिष्ट व्यंजन का लुत्फ उठाना पसंद नहीं करेगा, न ही वह सुखद संगीत का आनंद उठाना पसंद करेगा।''

—एनालेक्ट्स 17:21

यह वार्त्तालाप का प्रसंग कन्फ्यूशियस के जीवन में बाद में आया; किंतु जब वे युवा थे तब भी उन्होंने निश्चित रूप से ऐसा ही महसूस किया होगा। यही वजह है कि अपनी माता के देहांत के बाद उन्होंने तीन वर्षों तक शोक मनाने का फैसला किया। इसका अर्थ है कि बीस साल की उम्र में उन्होंने विवाह किया और नौकरी की शुरुआत की।

कुछ बाद के जीवनीकारों ने लिखा है कि अपनी माता की अंत्येष्टि प्राचीन झोउ रीति-रिवाजों के साथ करने की वजह से कन्फ्यूशियस को लोगों की आलोचना का सामना करना पड़ा। इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिलता, किंतु इतना तो निश्चित है कि उन्होंने अपनी माता के निधन के बाद उसी तरह शोक मनाया जिस तरह परिवार के मुखिया के गुजर जाने के बाद शोक मनाया जाता है। ऐसा करके उन्होंने परंपरा का उल्लंघन किया था। हालाँकि कुछ लोगों का मानना है कि माता की परंपरागत अंत्येष्टि करते हुए कन्फ्यूशियस ने कट्टर संरक्षणवादी होने का परिचय दिया था; लेकिन यह बात सही प्रतीत नहीं होती। उन्होंने अपनी माता की अंत्येष्टि परंपरागत विधि-विधान से करते हुए समाज को यह संदेश देने का प्रयास किया था कि उनकी माता उनके लिए सबसे ज्यादा अहमियत रखती थीं। उनके लिए पिता की कोई अहमियत नहीं रह गई थी, जिन्होंने उनको नाम के सिवाय कुछ नहीं दिया था। वैसे, झेंगझाई को अंत्येष्टि के अवसर पर जैसा सम्मान मिला, वैसा सम्मान पहले कभी नहीं मिल पाया। चीन के तत्कालीन पुरुष-प्रधान पितृ सत्तात्मक समाज में एक अकेली साहसी माता को समाज कोई खास अहमियत नहीं दे सकता था। तब माना जाता था कि पुरुष ही अपनी संतान में प्रतिभा का सूत्रपात करते हैं। कन्फ्यूशियस ने स्वयं बाद में कहा कि वे 'जन्म से ही ज्ञानी' नहीं थे। उन्होंने जो भी ज्ञान हासिल किया, अध्ययन के जरिए ही वैसा संभव हो पाया और ज्ञान प्राप्त करने का अवसर उनकी माता ने मुहैया करवाया—

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''मैं ज्ञान के साथ पैदा नहीं हुआ था। मुझे प्राचीन ग्रंथों से लगाव था और उनमें निहित ज्ञान को समझने के लिए मैंने कठोर मेहनत की।''

—एनालेक्ट्स 7:20

कन्फ्यूशियस के देहांत के बाद जब उनके जीवन की कथा लिखी गई तो उनके जीवन में उनकी माता की महत्त्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज कर दिया गया। किसी जीवनीकार ने उनकी विलक्षण मेधा को दैवी चमत्कार बताया तो किसी ने कोंग परिवार का आनुवंशिक गुण बताया। इन जीवनीकारों ने झेंगझाई को महज कन्फ्यूशियस की जननी के रूप में चित्रित किया।

वर्तमान युग के जीवनीकारों ने भी झेंगझाई की अहमियत को उजागर करने का प्रयास नहीं किया है। तत्कालीन पुरुष-प्रधान समाज को कन्फ्यूशियस के जीवन का आरंभिक हिस्सा इस कदर परंपरा-विरोधी प्रतीत हुआ था कि उसने उनकी माता की भूमिका की उपेक्षा करना जरूरी समझा।

झेंगझाई के पुत्र ने अपनी माता को समुचित सम्मान दिया, अंत्येष्टि के अवसर पर प्राचीन झोउ रीति-रिवाजों का निष्ठा के साथ पालन किया; लेकिन वर्तमान समय में झेंगझाई की समाधि का कोई निशान नहीं मिलता।

जीवनीकारों ने लिखा है कि माता का देहांत होने के बाद तीन वर्षों तक शोक मनाने के लिए कन्फ्यूशियस पूरी तरह एकांतवास में चले गए थे। दिवंगत माता-पिता को सम्मान देने के बारे में उनके विचारों को देखते हुए यह बात सही प्रतीत होती है। ऐसा लगता है कि उन्होंने शोक के तीन वर्ष यान परिवार के घर में गुजारे थे, जहाँ उनका बचपन गुजरा था। शोक की अवधि समाप्त होने के बाद उन्हें नौकरी की शुरुआत करनी थी, विवाह करना था और अपनी गृहस्थी आबाद करनी थी।

शोक के ये तीन वर्ष कन्फ्यूशियस के लिए वरदान साबित हुए, जब उन्होंने पूरी तरह अपने आपको अध्ययन के लिए समर्पित कर दिया।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''दस परिवारों की बस्ती में जरूर कोई मेरी तरह वफादार और विश्वसनीय रहा होगा; मगर मुझे संदेह है कि शायद ही मेरी तरह किसी के मन में अध्ययन के प्रति लगाव रहा होगा।''

—एनालेक्ट्स 5:28

ये तीन वर्ष कन्फ्यूशियस के लिए निजी स्तर पर ज्ञानार्जन करने के वर्ष थे। उनकी आरंभिक शिक्षा पूरी हो चुकी थी और अब उनके पास तीन वर्ष थे, जब वे अपने अध्ययन को और भी अधिक गहराई प्रदान कर सकते थे। इस अवधि में उन्होंने ज्ञानार्जन की विधियों का अन्वेषण किया और जीवन के बाद के वर्षों में उन्हीं विधियों का प्रयोग अध्यापन करने के लिए किया।

इन तीन वर्षों में उन्हें भरपूर एकांत मिला। शोक मना रहे पुत्र के लिए किसी भोज में शामिल होना, संगीत कार्यक्रम में शामिल होना, रंग-बिरंगी पोशाक पहनना या लजीज व्यंजन खाना वर्जित माना जाता था। इस तरह की सादगीपूर्ण दिनचर्या कन्फ्यूशियस पसंद करते थे। उनकी माता ने अपनी मृत्यु के साथ तोहफे में उन्हें तीन अनमोल वर्ष दे दिए थे, जिन तीन वर्षों का इस्तेमाल वे स्वयं को शिक्षित करने के लिए करना चाहते थे।

हम इस अवधि की कल्पना कर सकते हैं कि सादगीपूर्ण वेशभूषा में वे खिड़की के सामने या किसी पेड़ के नीचे बैठकर अध्ययन करने में जुटे रहते थे। घंटों पढ़ाई करते हुए वे रूखा-सूखा भोजन ग्रहण कर अपनी भूख मिटाते थे। उनके साथ यान परिवार भी अपनी प्यारी बेटी और बहन का शोक मना रहा था। कन्फ्यूशियस ने सादगीपूर्ण जीवन-शैली अपनाने का संकल्प इसी अवधि में लिया। जीवन के बाद के वर्षों में सादगीपूर्ण जीवन जीनेवाले अपने शिष्य

यान हुई की उन्होंने सराहना की।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''हुई सचमुच गुणी था। वह एक कटोरी चावल और एक प्याली पानी के सहारे गुजारा कर लेता था। दूसरों के लिए उसकी तरह तकलीफ उठाना आसान नहीं हो सकता था; मगर हुई हमेशा प्रसन्न बना रहता था, चूँकि उसे अपने अध्ययन से लगाव था।''

—एनालेक्ट्स 6:11/6:3

कन्फ्यूशियस को भी अध्ययन से गहरा लगाव था, इसलिए पुस्तकों की संगति में उन्होंने तीन वर्ष आसानी से गुजार दिए। शुरू-शुरू में तीन वर्षों की अवधि बहुत लंबी प्रतीत हुई होगी, लेकिन जैसे-जैसे कन्फ्यूशियस अध्ययन की गहराई में उतरते गए, उन्हें समय का अहसास नहीं रह गया। उन्हें लगा कि कितना कुछ सीखना है और सीखने के लिए समय कितना कम है। उन्होंने महसूस किया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने ज्ञान की सीमा को ईमानदारी के साथ स्वीकार करना चाहिए।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''क्या मुझे तुम्हें ज्ञान के बारे में पढ़ाना चाहिए? जो तुम जानते हो, वह जानते हो; जो तुम नहीं जानते, वह नहीं जानते। यही तो ज्ञान है।''

—एनालेक्ट्स 2:17

वे यह भी समझ रहे थे कि अगर उन्हें कोई उपलब्धि हासिल करनी है तो काफी सावधानी के साथ अध्ययन के क्षेत्र का चुनाव कर अपने ध्यान को एकाग्र करना होगा। उन्हें उस विषय की गहराई में उतरना पड़ेगा।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''जो सीखा गया, उस पर पर्याप्त चर्चा न हो; जो नया ज्ञान सीखा गया, उसका आत्म-विकास के लिए प्रयोग न हो तो मुझे असहज महसूस होता है।''

—एनालेक्ट्स 7:3

इस अवधि में कन्फ्यूशियस ने 'संगीत की पुस्तक', 'इतिहास की पुस्तक' और 'अनुष्ठानों की पुस्तक' का गहराई से अध्ययन किया। वे 'संगीत की पुस्तक' को सभी विद्याओं की बुनियाद मानते थे और बाद के वर्षों में इसी को आधार बनाकर उन्होंने अपने विचारों को प्रचलित किया।

जब ये तीन शांत, सहज, एकाकी वर्ष व्यतीत हो गए तो अध्ययन का सिलसिला भी समाप्त हो गया। जब उनका बीसवाँ जन्मदिन आ गया तो वे समझ गए कि शोक के तीन साल गुजर चुके हैं और अब उनके कार्यक्षेत्र में उतरने का वक्त आ गया है। अब उन्हें विवाह करना था और जी राजपरिवार की नौकरी करते हुए नए घर में जाकर गृहस्थी बसानी थी। अब उन्हें राजकर्मचारी की भूमिका निभानी थी और ऐसा करते हुए अध्ययन के लिए पर्याप्त समय निकाल पाना उनके लिए संभव नहीं रह गया था।

❑

विवाह

आखिरकार हिचकते हुए कन्फ्यूशियस शोक की अवधि से बाहर निकल आए।उन्होंने पुस्तकों को एक तरफ रखा और अपने आपको जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने के लिए तैयार किया।

सबसे पहले उनका विवाह समारोह आयोजित किया गया और सुसंस्कृत यान परिवार के शांत वातावरण में अब शोरगुल सुनाई देने लगा। सवेरे से ही पात्रों की सफाई होने लगी। तरह-तरह के व्यंजनों की तैयारी होने लगी। भोज के लिए लकड़ियाँ जुटाई गईं और घर की अच्छी तरह सफाई की गई। सभी के मन में विवाह को लेकर उत्साह था; किंतु संभवत: दूल्हे के मन में किसी तरह का उत्साह नहीं था। कन्फ्यूशियस कमरे में बैठकर किसी पुस्तक का अध्ययन कर रहे थे और परिवार की कोई सेविका कमरे में फर्श की सफाई करने में जुटी हुई थी। परंपरा के अनुसार कन्फ्यूशियस अपनी भावी पत्नी से विवाह से पहले सिर्फ एक बार मिल पाए होंगे और उन्होंने विवाह के बाद केवल चार वर्षों तक दांपत्य जीवन का सुख उठाया। उस युग की परंपरा के अनुसार कन्फ्यूशियस का विवाह परिवार की तरफ से निश्चित कराया गया था।

विवाह के दिन यान परिवार के आँगन में वर एवं कन्या पक्ष के रिश्तेदार और मित्र एकत्र हो गए। सभी एक लंबी मेज के सामने बैठकर हँसी-मजाक करते हुए मदिरापान करने लगे। सेवकगण जल्दी-जल्दी खाली मदिरा पात्रों में मदिरा उड़ेल रहे थे।

भोज के बाद विवाह का अनुष्ठान संपन्न हुआ। अनुमान के मुताबिक यह अनुष्ठान यान परिवार के मंदिर में आयोजित हुआ होगा। परंपरागत चीनी विवाह में दो व्यक्तियों के मिलन से ज्यादा दो परिवारों के मिलन पर जोर दिया जाता था। कन्फ्यूशियस की पत्नी ने पति के पूर्वजों की आत्मा को श्रद्धांजलि देने के लिए सिर झुकाया होगा। इस अवसर पर थोड़ी सी परेशानी हुई होगी। चूँकि कन्फ्यूशियस के पैतृक परिवार का कोई सदस्य समारोह में शामिल नहीं हुआ था—अठारह वर्षों से उनके बीच किसी तरह का संपर्क नहीं रह गया था और तीन साल पहले उनकी माता का देहांत हो चुका था। कन्फ्यूशियस के अभिभावक की भूमिका उनके नाना ने निभाई होगी। जो उस समय साठ वर्ष के हो चुके थे। विवाह में अहम भूमिका निभानेवाले जिन भाइयों का उल्लेख कन्फ्यूशियस ने किया है, वे उनके मामा के पुत्र रहे होंगे।

इस तरह विवाह समारोह कन्फ्यूशियस के लिए बनावटी किस्म का रहा होगा। उन्होंने महसूस किया होगा कि परिवार की जिम्मेदारी निभाने के लिए उन्हें इस अनुष्ठान में शामिल होना पड़ रहा था। यान परिवार का अहसान उनके ऊपर था। ननिहालवालों ने ही उनका पालन-पोषण किया था। इसी परिवार ने कन्या चुनकर उनका विवाह करने का फैसला किया था और परिवार के फैसले से असहमत होने का सवाल ही पैदा नहीं होता था।

भले या बुरे के लिए (लगता है, परिणाम बुरा ही निकला) कन्फ्यूशियस का विवाह संपन्न हो गया। वक्ताओं ने आशीर्वाद दिया और नवविवाहित जोड़े को सुखी दांपत्य जीवन के लिए शुभकामनाएँ दीं। कन्फ्यूशियस ने विनम्रता के साथ मुसकराते हुए शुभकामनाओं को स्वीकार किया; किंतु अंदर-ही-अंदर जरूर उन्हें बेचैनी महसूस हो रही थी। इस बात की कोई जानकारी नहीं मिलती कि इतनी जल्दी उनके दांपत्य जीवन का अंत कैसे हो गया था। उन्होंने अपनी पत्नी से संबंध-विच्छेद क्यों कर लिया? कई जीवनीकारों ने दावा किया है कि चार वर्षों के वैवाहिक जीवन के बाद उन्होंने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया था; किंतु इस बात की पुष्टि करने के लिए कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। हालाँकि कन्फ्यूशियस के जमाने में तलाक देना संभव हो सकता था, किंतु ज्यादा संभावना इस बात की

नजर आती है कि पति और पत्नी ने अलग-अलग रहने का निर्णय लिया था। ऐसा मानने की अहम वजह यह है कि इस जोड़े की दूसरी संतान के जन्म के बाद तत्कालीन दस्तावेजों में कहीं भी कन्फ्यूशियस की पत्नी का उल्लेख नहीं मिलता और 'एनालेक्ट्स' के विवरण से पता चलता है कि कन्फ्यूशियस अपने पुत्र से कभी-कभार ही मिल पाते थे और दोनों के बीच किसी तरह का लगाव नहीं था। वहीं यह बात भी सभी जानते हैं कि कन्फ्यूशियस की पत्नी का विवाह के कुछ वर्षों बाद ही देहांत नहीं हुआ था। अगर उनकी पत्नी का देहांत हुआ होता तो वह अपनी माता के देहांत के बाद शोक मनाने की तरह पत्नी का भी शोक मनाते और इस बात का उल्लेख दस्तावेजों में जरूर मिलता। इसका मतलब है कि उनके लिए अपनी पत्नी की कोई अहमियत नहीं रह गई थी और दोनों की राहें जुदा हो गई थीं। वैसे भी, यह कोई प्रेम-विवाह नहीं था। अगर कोई विवाह चार साल बाद ही नाकाम हो जाए तो यह बात आज के युग में भी अस्वाभाविक प्रतीत हो सकती है। ई.पू. 530 में यह जरूर बड़ी परिघटना रही होगी।

हो सकता है कि उन्हें दांपत्य जीवन में प्रेम की कमी महसूस हुई हो, हालाँकि उस युग में रोमांटिक प्रेम की धारणा प्रचलित थी। 'कविता की पुस्तक' में प्रेम विषयक कई कविताएँ संकलित की गई हैं। क्या कन्फ्यूशियस के जीवन में प्रेम आया था? जितने भी दस्तावेज उपलब्ध हैं, उनसे इस संबंध में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। केवल एक प्रसंग का उल्लेख मिलता है, जो पत्नी के अलावा किसी अन्य स्त्री के साथ उनकी मुलाकात का संकेत देता है। इस प्रसंग में बताया गया है कि कन्फ्यूशियस वेई के शासक की तीसरी पत्नी नांजी से मिलने गए थे। नांजी लंपट स्वभाव की महिला थी, जो दरबार के सभी प्रमुख सदस्यों के साथ हमबिस्तर हो चुकी थी। वह अपनी सूची में एक संत को शामिल करना चाहती थी या कन्फ्यूशियस अपनी मरजी से उससे मिलने गए थे, इस संबंध में कोई निश्चित जानकारी नहीं मिलती। दो जीवनीकारों ने अलग-अलग तरीके से इस प्रसंग का वर्णन किया है, किंतु इतना तो निश्चित है कि वह मुलाकात बंद कमरे के भीतर हुई थी। सीमा कियान ने अपने वर्णन में कन्फ्यूशियस के मर्यादित चरित्र का उल्लेख करते हुए लिखा है कि राजा की पत्नी के निमंत्रण पर कन्फ्यूशियस उससे मिलने के लिए गए और कोई भी अवांछित घटना नहीं घटी।

'एनालेक्ट्स' में इस बात का दावा नहीं किया गया है कि उन्हें कामुक स्त्री से मिलने के लिए मजबूर होना पड़ा था, बल्कि कन्फ्यूशियस के मुँह से यह कहलवाया गया है कि उनकी अंतरात्मा साफ है। लोग भले ही गलत मतलब निकालें कि बंद कमरे के भीतर उन्होंने कोई अमर्यादित कार्य किया था।

''आचार्य नांजी से मिलने गए और जिलू नाराज हो गया। आचार्य ने अपना पक्ष स्पष्ट करते हुए कहा—अगर मैंने कुछ गलत किया है तो ईश्वर मुझे सजा देगा। इसका निर्णय ईश्वर पर छोड़ दो।''

—एनालेक्ट्स 6:28

उनका शिष्य जिलू अकसर उनके लिए नैतिकता के प्रहरी की भूमिका निभाता था। जब भी उसे लगता था कि आचार्य अपने सिद्धांतों को तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं तो वह उन्हें सावधान कर देता था।

विवाह के बाद दावत की मेज के पास आमने-सामने बैठकर कन्फ्यूशियस और उनकी पत्नी एक-दूसरे की तरफ देखते हुए सोच रहे थे कि उनका भावी जीवन किस तरह व्यतीत होने वाला था। अगर वे दोनों चार सालों तक ही साथ-साथ रह सके तो इसका अर्थ यही था कि शुरू से ही दोनों के विचारों में जमीन-आसमान का अंतर था। पत्नी यह देखकर जरूर चिंतित हुई होगी कि वह ऐसे व्यक्ति के साथ कैसे जीवन गुजारेगी, जिसके होंठों पर हमेशा तिरछी मुसकान रहती है, मानो जिंदगी कोई ऐसा मजाक हो, जिसे केवल वही समझ पा रहा हो।

कन्फ्यूशियस भी शायद यही सोच रहे थे कि भावी जीवन में उस अपरिचित नारी के साथ उनका किस तरह का

संवाद स्थापित होने वाला था। कन्फ्यूशियस का पालन-पोषण सुसंस्कृत परिवार में हुआ था। वहीं उनकी पत्नी क्वी परिवार की थी जो यान परिवार की तरह सुसंस्कृत नहीं था। कन्फ्यूशियस को अपनी पत्नी के प्रबुद्ध न होने की चिंता शायद उसी समय से सताने लगी थी।

❑

कर्मक्षेत्र में

जब विवाह समारोह का समापन हो गया और संभवत: भोजन की मेज और आँगन की पूरी सफाई भी नहीं हुई, उसी समय कन्फ्यूशियस को अपनी नई-नवेली पत्नी के साथ जी परिवार की नौकरी करने के लिए रवाना होना पड़ा।

उनकी पहली नौकरी अनाज भंडार के प्रभारी की थी और निश्चित रूप से उन्हें रहने के लिए जी परिवार के अनाज भंडार के पास ही घर मुहैया कराया गया। संभवत: विवाहित जोड़े को इस दौरान कई चीजों की कमी अखरती रही होगी। खेत-खलिहान के पास सूअर के बाड़े के बगल में उनका नया बसेरा शायद ही उनके लिए कल्पना का घर रहा होगा। कन्फ्यूशियस की पत्नी ने बचपन से ऐसे किसी घर में गृहस्थी बसाने का सपना शायद ही देखा होगा। कन्फ्यूशियस भी मानते थे कि केवल सुंदर नजारे की कोई अहमियत नहीं हो सकती, जब तक कि माहौल भी सुंदर न हो।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''जहाँ तक किसी बस्ती का सवाल है, मानवीयता से ही इसकी खूबसूरती में इजाफा होता है। अगर आप एक ऐसे स्थान पर रहना शुरू करते हैं, जहाँ मानवीयता नहीं है, वहाँ आप अपने ज्ञान का विकास किस तरह कर सकते हैं?''

—एनालेक्ट्स 4:1

पत्नी ने अपने पति का अनुसरण करने का संकल्प लिया होगा। चीन में हमेशा से पत्नी खुद को पति की परछाईं मानती है और उसका अनुसरण करती है। वह जरूर बरतनों को टकराकर अध्ययन में डूबे अपने पति का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने की कोशिश करती होगी।

कन्फ्यूशियस ने अपनी पत्नी के साथ सद्भावपूर्ण संबंध बनाकर गृहस्थी की शुरुआत करने की कोशिश की होगी। जीवन के आरंभिक वर्ष जी पाठशाला में व्यतीत करने के कारण उन्हें गणित और लेखन विद्या में औपचारिक रूप से पारंगत माना जा रहा था और अब उन्हें अनाज का हिसाब रखने का दायित्व सौंपा गया था। भंडार गृह में साल भर जितना अनाज एकत्रित किया जाता था, उसका हिसाब उनको रखना था। सारा अनाज जी परिवार के खेतों से ही नहीं लाया जाता था, बल्कि स्थानीय किसानों से लगान के रूप में अनाज वसूला जाता था। सामंती व्यवस्था के तहत किसानों को अपनी फसल का निर्धारित हिस्सा सामंत को लगान के रूप में देना पड़ता था। भंडार गृह में एकत्रित किए गए अनाज का वितरण वेतन के रूप में जी परिवार के कर्मचारियों के बीच किया जाता था और बाकी अनाज जी परिवार अपने उपयोग के लिए रख लेता था। कन्फ्यूशियस को वेतन के रूप में सालाना एक सौ टोकरी अनाज मिलता था। उन्हें अपनी कमाई में से लगान का हिस्सा जी परिवार के पास जमा भी करवाना पड़ता था।

उस युग में अनाज का आशय बाजरा था जिससे आटा तैयार किया जाता था। उसी आटे से रोटियाँ पकाई जाती थीं या अन्य तरह से भोजन के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। अनाज का उपयोग कर्मचारियों को वेतन देने के अलावा वस्तुएँ खरीदने के लिए भी किया जाता था। अनाज के अलावा खरीद-बिक्री के उद्देश्य से मुद्रा का प्रयोग भी किया जाता था। अनाज के भंडार गृह के प्रभारी के रूप में कन्फ्यूशियस भी निश्चित रूप से मुद्रा का प्रयोग कर रहे थे। चीन में उस युग में भी अत्यंत विकसित मुद्रा प्रणाली प्रचलित थी; जबकि पश्चिमी देशों में उन्नीसवीं सदी में मुद्रा का प्रचलन संभव हो गया। कन्फ्यूशियस युग में प्रचलित जो सिक्के बरामद हुए हैं, उन पर चाकू और दीवार

के चित्र मिले हैं। जिस युग में विकसित मुद्रा प्रणाली प्रचलित थी, उस युग में कन्फ्यूशियस के कार्य के संबंध में आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है। उन्हें भंडार गृह में जमा होनेवाले अनाज का हिसाब ध्यान से रखना पड़ता था। हो सकता है कि उन्हें उस समय इस तरह का काम कठिन प्रतीत हुआ हो और मन-ही-मन उन्होंने कोई बौद्धिक कार्य करने की कल्पना की हो। किंतु जीविका के लिए उन्हें वही काम करना था और अपनी नौकरी से उन्हें कोई शिकायत नहीं थी।

कन्फ्यूशियस प्रत्येक कार्य को महत्त्वपूर्ण समझते थे और समर्पित होकर अपने दायित्व का पालन करते थे। वे चाहते थे कि दूसरे भी अपने कर्तव्य का पालन अच्छी तरह करें।

''प्रत्येक दिन अपने घर से बाहर निकलो और प्रत्येक व्यक्ति से इस अंदाज से मिलो, मानो तुम किसी महत्त्वपूर्ण अतिथि का स्वागत कर रहे हो। किसी भी कार्य में उसी निष्ठा से योगदान करो मानो तुम किसी महान् समारोह में भाग ले रहे हो। असंतोष के बिना जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करो।''

—एनालेक्ट्स 12:2

निश्चित रूप से अपनी नौकरी में उन्हें सफलता मिल रही थी। उनके हिसाब में कोई त्रुटि नहीं होती थी और माप-तौल के मामले में भी वे पारंगत थे।

अपने कार्य में वे इस कदर सफल थे कि दो सालों तक अनाज का हिसाब रखने के बाद प्रसन्नतापूर्वक प्रतिदिन घर लौटते हुए उन्हें नौकरी में पदोन्नति मिली थी और उनके वेतन में भी इजाफा किया गया था। अब उन्हें सालाना 150 टोकरी अनाज मिलने लगा था। अब उन्हें मवेशियों का प्रभारी बना दिया गया था। इस नई जिम्मेदारी के तहत कन्फ्यूशियस को घोड़ों की देखभाल नहीं करनी थी, बल्कि उन्हें मवेशियों का हिसाब रखना था और उनके प्रजनन की निगरानी करनी थी।

जीवन में बाद के वर्षों में कन्फ्यूशियस की कई व्यावहारिक दक्षताओं की सराहना उनके प्रशंसकों ने की और इन दक्षताओं को संत की स्वाभाविक खूबियाँ बताईं, मानो ईश्वर ने उन्हें जन्म के समय ही सर्वगुण-संपन्न बनाकर इस धरती पर भेजा था।

एक बड़े मंत्री ने जिगोंग से पूछा, ''क्या तुम्हारे आचार्य वास्तव में एक पहुँचे हुए सिद्ध पुरुष नहीं हैं? उनके पास कितनी तरह की खूबियाँ मौजूद हैं!''

—एनालेक्ट्स 9:6:1

लेकिन कन्फ्यूशियस इस बात का विरोध करते थे। जब भी लोग उन्हें चमत्कारी पुरुष मानने की कोशिश करते थे तो उन्हें झुँझलाहट महसूस होने लगती थी।

इस तरह की बातें सुनने के बाद आचार्य ने कहा, ''वह मंत्री मेरे बारे में कितनी जानकारी रखता है? जब मैं युवा था तब छोटे पद पर नौकरी करते हुए मैंने कई तरह के हुनर सीखे थे। क्या किसी संत का इस तरह हुनरमंद होना जरूरी है? बिलकुल नहीं।''

—एनालेक्ट्स 9:6:3

पशु संपत्ति के प्रभारी का दायित्व वे सफलतापूर्वक निभा रहे थे; हालाँकि बीच-बीच में उनके मन में सवाल कौंध रहा था—क्या मुझे यही करना है? क्या जीवन भर मुझे यही काम करना है? मवेशियों की गिनती करते रहना है?

अन्य युवाओं की तरह कन्फ्यूशियस के मन में भी महत्त्वाकांक्षाएँ रही होंगी और जरूर उन्होंने अपने जीवन के उत्थान की कल्पना की होगी। अपने कर्तव्य को निभाते हुए उनके मन में कभी किसी तरह की कड़वाहट का भाव

पैदा नहीं हुआ।

उन्हें पता था कि एक-न-एक दिन उनका वांछित समय जरूर आने वाला था।

❑

पारिवारिक जीवन

कन्फ्यूशियस की उम्र अब बाईस साल की हो चुकी थी। दो साल पहले उनका विवाह हुआ था और उन्होंने नौकरी शुरू की थी। कार्यक्षेत्र में उनका प्रदर्शन संतोषप्रद रहा था। अनाज भंडार के प्रभारी के रूप में जिस तरह उन्होंने दक्षता से काम किया था, उसी दक्षता के साथ अब वे पशु संपत्ति के प्रभारी के रूप में काम कर रहे थे। उनके कार्य से सभी कर्मचारी संतुष्ट और प्रसन्न थे। भले ही भावी जीवन के बारे में उन्होंने सपने देखे थे, किंतु अभी वे एक देहाती इलाके में मवेशियों के प्रभारी की नौकरी कर रहे थे; किंतु वे प्रतिदिन घर से प्रसन्नतापूर्वक इस तरह बाहर निकलते थे, मानो किसी अतिथि का स्वागत करने के लिए जा रहे हों। वे अपने मातहत कर्मचारियों के साथ अच्छा बरताव करते थे और सही समय पर कार्यों का निष्पादन करते थे।

संभव है कि उनके घर में खुशी का माहौल नहीं था। उनका दांपत्य जीवन सुरक्षित नहीं था और दो साल बाद ही उनका दांपत्य जीवन समाप्त होने वाला था, इसलिए अब तक पति-पत्नी के बीच निश्चित रूप से तनाव पैदा होने लगा था। संबंध-विच्छेद की वजह के बारे में कोई निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं है; किंतु ऐसा लगता है कि कन्फ्यूशियस की पत्नी अपने पति को देखकर नाउम्मीद होती गई थी, जो प्रतिदिन गोबर में लथपथ होकर घर लौटते थे और जो अपने हालात को सुधारने की कोई चिंता नहीं कर रहे थे। फुरसत की घड़ियों में सामाजिक संपर्क बढ़ाने की जगह वे पुस्तकों का अध्ययन करने में जुटे रहते थे।

जिस समय उनके वैवाहिक जीवन में तनाव बढ़ता जा रहा था, उसी दौरान एक अच्छी घटना के रूप में उनके पुत्र का जन्म हुआ था। बालक का नाम 'कोंग ली' रखा गया। इस नामकरण को लेकर कन्फ्यूशियस के जीवन का एक दिलचस्प किस्सा जुड़ा हुआ है, जो सच हो सकता है या सच नहीं भी हो सकता है; मगर कम-से-कम आंशिक रूप से सच लगता है।

उस युग में 'ली' मछली को काफी स्वादिष्ट माना जाता था और दावतों में 'ली' मछली का व्यंजन मेहमानों को परोसा जाता था। अमीर सामंतों के पोखर में ली मछलियाँ होती थीं और दावत के अवसर पर ली मछली का व्यंजन परोसने का नियम था। पुत्र के जन्म की खुशी में दावत के अवसर पर मेहमानों को परोसने के लिए कन्फ्यूशियस के पास ली मछलियाँ नहीं थीं, क्योंकि वे एक सामान्य कर्मचारी थे। ली मछली का इंतजाम करने के लिए उन्हें जी परिवार के पोखर से मछलियाँ पकड़नी पड़तीं या पड़ोस के किसी जलाशय में जाकर ली मछली की खोज करनी पड़ती। एक जनश्रुति के अनुसार, पड़ोस के एक सामंत ने तोहफे में उन्हें ली मछलियाँ दी थीं और उसी सम्मान के प्रतीक रूप में उन्होंने अपने पुत्र का नामकरण किया था।

आरंभिक जीवनीकारों के अनुसार जिस सामंत ने कन्फ्यूशियस को ली मछलियाँ दी थीं, वह स्वयं लू का शासक था। आधुनिक जीवनीकारों ने इस बात का खंडन करते हुए तर्क दिया है कि लू के शासक को एक अल्पज्ञात कर्मचारी के पुत्र-जन्म की सूचना कैसे मिली होगी और उसने एक दिन की यात्रा पूरी कर ली मछलियाँ कन्फ्यूशियस को देने का फैसला क्यों किया होगा? आधुनिक जीवनीकारों को लगता है कि सामंत जी ने तोहफे के रूप में कन्फ्यूशियस को ली मछलियाँ दी होंगी। कन्फ्यूशियस ने अपने पुत्र को प्यार से पुकारने का नाम 'बो यू' रखा, जिसका अर्थ है—छोटी मछली।

कन्फ्यूशियस पिता बन गए थे। उनसे अपेक्षा थी कि बच्चों के पालन-पोषण के संबंध में वे कुछ उपयोगी नसीहत देते; मगर परिवार को लेकर उनके जो विचार मिलते हैं, वे सामान्य किस्म के हैं।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''परिवार में पिता और बड़े भाइयों की सेवा करो, मृतकों के प्रति निस्स्वार्थ भाव से अपने कर्तव्य का पालन करो और मदिरा के गुलाम मत बनो।''

—एनालेक्ट्स 9:16

अगर कन्फ्यूशियस कहना चाहते थे कि उन्होंने इन तीन सूत्रों को अपने जीवन में अमल किया था तो पहले सूत्र के बारे में उनका दावा सही नहीं प्रतीत होता। जब वे केवल दो साल के थे, तभी उन्हें पिता से अलग होना पड़ा था। संभवत: वे श्रोताओं के सामने अपने बचपन की बातों की चर्चा नहीं करना चाहते थे और वे भले ही एक महान् दार्शनिक थे, किंतु पिता के रूप में उन्हें नाकाम होना पड़ा था। उनके पिता ने तो उनके प्रति किसी तरह का दायित्व निभाया ही नहीं था।

कोंग शूलियांग ने अपने बच्चे को उसी समय घर से निकाल दिया, जब वह महज दो साल का था। इसके तुरंत बाद ही कोंग शूलियांग का देहांत हो गया था। कन्फ्यूशियस ने या तो स्वयं परिवार छोड़ दिया था या परिवार छोड़ने के लिए उन्हें मजबूर होना पड़ा था। उस समय उनका पुत्र भी महज दो साल का ही था; किंतु वे बीच-बीच में लौटकर पुत्र को पलते-बढ़ते हुए देखते रहे थे। खेद की बात यह थी कि बो यू को विरासत में न तो पिता जैसी बौद्धिक क्षमता मिल पाई थी, न ही कठोर मेहनत करने लायक स्वभाव मिल पाया था।

चेन कांग ने बो यू से पूछा, ''क्या तुमने अपने पिता में कोई ऐसी भिन्न बात सुनी है, जो हम शिष्यों ने नहीं सुनी है?''

बो यू ने जवाब दिया, ''अभी तक नहीं। एक बार जब मेरे पिता खड़े थे तब मैं कक्ष से होकर तेजी से गुजर रहा था। उन्होंने मुझसे पूछा—क्या तुमने अभी तक कविता की किताब से कुछ सीखा है? मैंने कहा—नहीं। फिर मैंने कविता की किताब का अध्ययन किया। एक दिन फिर वैसा ही हुआ। उन्होंने मुझसे पूछा—क्या तुमने अनुष्ठान की किताब से कुछ सीखा है? मैंने कहा—नहीं। उन्होंने कहा—अगर तुम आचरण के नियम नहीं सीखोगे तो तुम्हारा समुचित विकास नहीं हो पाएगा। मैंने जाकर अनुष्ठान की किताब का अध्ययन किया। मैंने उनसे यही दो बातें सुनीं।''

—एनालेक्ट्स 16:13

कन्फ्यूशियस ने कुछ दिनों के बाद बो यू को गंभीरतापूर्वक अध्ययन करने की हिदायत दी। बो यू ने अभी तक अपने पिता की प्रिय पुस्तक 'कविता की पुस्तक' का शुरुआती दो खंडों का अध्ययन नहीं किया था।

आचार्य ने अपने पुत्र बो यू से पूछा, ''क्या तुमने दोनों खंडों का अध्ययन पूरा कर लिया है?''

''जिस व्यक्ति ने इन दो खंडों का अध्ययन नहीं किया है वह उस व्यक्ति के समान है, जो दीवार के सामने मुँह करके खड़ा है।''

—एनालेक्ट्स 17:10

स्पष्ट है कि कन्फ्यूशियस को अपने पुत्र से निराश होना पड़ा था। एक बार दु:खी होकर उन्होंने कहा था, ''सभी अपने पुत्र का नाम लेते रहते हैं, भले ही पुत्र में प्रतिभा हो या न हो।''

—एनालेक्ट्स 11:8

बो यू ने दूसरे मामलों में भी उन्हें निराश किया था; मगर इस संबंध में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। इतना तो तय है कि पिता ने अपने इस प्रतिभा-विहीन अकर्मण्य पुत्र को क्षमा कर दिया था। शायद बो यू अपनी माता का पक्ष लेता था और पिता के प्रति अपनी नापसंदगी को छुपाना जरूरी नहीं समझता था। इस बात का कोई प्रमाण नहीं

मिलता कि बालिग होने के बाद बो यू ने अपने पिता के साथ कोई संपर्क रखा हो। 'एनालेक्ट्स' में दो प्रसंगों के जरिए बो यू की अकर्मण्यता का उल्लेख किया गया है। ऐसा लगता है कि आचार्य के शिष्य बीच-बीच में बो यू से मिलते रहते थे। एक और प्रसंग का उल्लेख किया गया है कि किस तरह कन्फ्यूशियस विलंब से बो यू की अंत्येष्टि में शामिल हुए थे—बो यू की मौत छियालीस साल की उम्र में हो गई थी।

कन्फ्यूशियस ने जीवन में बाद के वर्षों में कहा था कि उनका असली पुत्र बो यू नहीं था, बल्कि यान हुई था। यान हुई उनका सर्वाधिक प्रतिभाशाली और प्रिय शिष्य था। आचार्य के देहांत से पहले ही जब यान हुई का देहांत हो गया तो आचार्य का दिल टूट गया। उन्होंने हुई को अपने पुत्र की मर्यादा प्रदान करते हुए अंत्येष्टि करने का अनुरोध किया था। उनके शिष्य इस बात से नाराज हो गए थे और सबने मिलकर ई की अंत्येष्टि उसके परिवार के पुत्र के रूप में ही की, भले ही यान हुई आचार्य के उपदेशों पर अमल करता रहा था और स्वयं को उनका पुत्र मानता रहा था।

पुत्र के अलावा कन्फ्यूशियस की एक पुत्री भी थी। 'एनालेक्ट्स' में केवल एक प्रसंग में उनकी पुत्री का उल्लेख मिलता है। इसके अलावा, पुत्री के बारे में किसी तरह की जानकारी उपलब्ध नहीं है।

''कन्फ्यूशियस ने कुंग ये चांग से कहा कि वह विवाह के लिए उपयुक्त था, भले ही वह एक बार गिरफ्तार हो चुका था। इस तरह कन्फ्यूशियस ने उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया।''

—एनालेक्ट्स 5:1

संभवत: पुत्री भी अपने पिता की तरह बौद्धिक रूप से जागरूक थी और यान परिवार की परंपरा के अनुसार विद्यार्जन के प्रति लगाव रखती थी; मगर उसे अपनी योग्यता का विकास करने का अवसर नहीं मिल पाया था। अपने पुत्र से निराश हो चुके कन्फ्यूशियस को जीवन में बाद के वर्षों में अपनी पुत्री से संवाद कायम करते हुए तसल्ली मिली थी और उन्होंने घंटों उसके साथ 'कविता की किताब' की चर्चा की थी।

जीवन के अंतिम वर्षों में कन्फ्यूशियस को तब यह देखकर जरूर संतोष महसूस हुआ होगा कि उनका पोता जिसी उनके आदर्शों का अनुकरण कर रहा था। बो यू का पुत्र जिसी अपने दादा की तरह शिक्षक बना और उसने अपने दादा के विचारों को प्रचारित-प्रसारित करने की जिम्मेदारी का निर्वाह किया।

❑

आत्मावलोकन

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''मुझे इस बात की परवाह नहीं कि लोग मुझे नहीं जानते। मैं अपनी योग्यता कम होने को लेकर चिंतित रहता हूँ।''

—एनालेक्ट्स 14:30

पशु संपत्ति के प्रभारी के रूप में कन्फ्यूशियस ने कई साल गुजार दिए थे; मगर इस पद से आगे उन्हें पदोन्नति की कोई संभावना दिखाई नहीं दे रही थी। हालाँकि उनके वेतन में बढ़ोतरी की गई थी और उन्हें सालाना 200 टोकरी अनाज मिल रहा था, किंतु 25 वर्ष से अधिक उम्र के हो चुके कन्फ्यूशियस अपने जीवन की दिशा को लेकर जरूर मायूस हो गए थे। एक दशक तक कठोर मेहनत करते रहने के बावजूद अपनी पत्नी से उनका अलगाव हो चुका था। एक ऐसा पुत्र था जो मंद बुद्धि प्राणी था। एक प्यारी सी बेटी थी, जिससे उनकी मुलाकात नहीं हो पाती थी और एक ऐसी नौकरी थी, जिसमें आगे बढ़ने की कोई सीढ़ी दिखाई नहीं दे रही थी।

इसके बावजूद उन्हें विश्वास था कि संसार में उनकी अलग पहचान बनने वाली थी, हालाँकि उन्होंने कभी भी प्रसिद्धि हासिल करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया था। 'प्रसिद्ध' होने की प्रवृत्ति आधुनिक युग की बीमारी है, जिसका इलाज एंडी वारहोल ने बताया है कि 'भविष्य में प्रत्येक व्यक्ति को पंद्रह मिनट की प्रसिद्धि' मिल जाएगी। कन्फ्यूशियस ने इस किस्म की प्रसिद्धि की कभी तमन्ना नहीं की थी—

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''अच्छा पद नहीं मिलने को लेकर मैं चिंता नहीं करता। मैं अच्छा पद पाने के साधनों के व्यवहार को लेकर जरूर चिंतित होता हूँ। मैं गुमनामी की चिंता नहीं करता। मैं सही तरीके से लोगों के बीच अपनी पहचान बनाना चाहता हूँ।''

—एनालेक्ट्स 4:14

कन्फ्यूशियस इस बात से सहमत थे कि प्रत्येक व्यक्ति धन और यश को पाना चाहता है। दूसरे शब्दों में, धन और यश के मेल से ही सफलता हासिल होती है। किंतु कन्फ्यूशियस ने सफलता के साथ एक तीसरे घटक 'जेन' को जोड़ा था, जिसका अर्थ है—सदाचार। उनका मानना था कि सफलता हासिल करने के लिए सदाचार को पहला अनिवार्य गुण समझना चाहिए।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''अगर सदाचार की शर्त पर धन और यश मिल रहा हो तो उन दोनों का त्याग कर देना चाहिए। हर आदमी निर्धनता और कमजोर सामाजिक हैसियत को नापसंद करता है; मगर सदाचार की कीमत पर कभी भी निर्धनता से मुक्त होने का प्रयास नहीं करना चाहिए।''

—एनालेक्ट्स

कन्फ्यूशियस मानते थे कि श्रेष्ठ व्यक्ति किसी भी हालत में सदाचार का त्याग नहीं करता।

''अगर श्रेष्ठ व्यक्ति सदाचार का त्याग कर देगा तो वह श्रेष्ठ व्यक्ति कैसे कहला सकता है? श्रेष्ठ व्यक्ति अपनी भूख मिटाने की चाह में भी कभी सदाचार का त्याग नहीं करता।''

—एनालेक्ट्स 4:5

कन्फ्यूशियस अपने समकालीन समाज की तरफ देखते थे और उसके अंतर्विरोधों को देखकर उनके मन में झुँझलाहट का भाव पैदा होता था—

''ये लोग किस कदर दयनीय हैं! जब इनके पास कुछ नहीं होता तो अपना तमाशा बनाने के लिए ये कुछ हासिल

कर लेते हैं। जब इन्हें कुछ हासिल हो जाता है तो फिर इन्हें उसे गँवाने का डर सताने लगता है। गँवाने की चिंता के चलते वे कुछ भी करने के लिए तत्पर हो उठते हैं।''

—एनालेक्ट्स 17:15

कन्फ्यूशियस सांसारिक सफलताओं के विरोध में नहीं खड़े थे। वे केवल साधन की शुद्धि पर जोर देते थे। उन्हें यह देखकर पीड़ा होती थी कि भ्रष्टाचार के परिवेश में कुछ लोग दिन-प्रतिदिन धनी होते जा रहे थे।

स्वाध्याय के जरिए कन्फ्यूशियस पारंपरिक अनुष्ठानों का विशेषज्ञ बन जाना चाहते थे। उस युग में राजा और सामंत ऐसे विशेषज्ञों को अपना परामर्शक बनाते थे। यह अत्यंत सम्मानजनक पद होता था और इसके बदले ऊँचा पारिश्रमिक भी दिया जाता था। कन्फ्यूशियस काफी समय और ऊर्जा अपने आपको दक्ष बनाने के लिए खर्च कर रहे थे, क्योंकि वे वर्तमान नौकरी के दायरे से निकलकर अपना आत्म-विकास करना चाहते थे। हालाँकि इस मार्ग में भी अड़चन थी, क्योंकि उनके पास अनुष्ठान विद्या की औपचारिक शिक्षा नहीं थी। 'अनुष्ठान की पुस्तक' कंठस्थ होने पर भी कोई उन्हें 'गुरु' या 'जी' कहकर नहीं पुकार सकता था। इस पदवी को प्राप्त करने के लिए प्राचीन झोउ साम्राज्य की राजधानी लोचांग में स्थित विशाल मंदिर में अध्ययन प्राप्त करना आवश्यक था। लोचांग लू से काफी दूर पश्चिम दिशा में स्थित था और कन्फ्यूशियस को वहाँ पहुँचने की कोई उम्मीद नजर नहीं आ रही थी।

हालाँकि झोउ वंश का अब पूर्व प्रांतों के ऊपर किसी तरह का राजनीतिक नियंत्रण नहीं रह गया था, इसके बावजूद झोउ के केंद्रीय प्रांत में स्थित लोचांग को धार्मिक व सांस्कृतिक राजधानी का दर्जा मिला हुआ था। इस शहर में स्थित विशाल मंदिर की तरफ से समय-समय पर अनुष्ठानों के संबंध में निर्देशावली जारी की जाती थी। 'अनुष्ठान परामर्शक' इसी मंदिर से शिक्षा प्राप्त कर विभिन्न राज्यों में घूमते हुए शुल्क के बदले परामर्श देने का कार्य करते थे। अगर कन्फ्यूशियस को अनुष्ठान परामर्शक के रूप में काम करना था तो उनके लिए लोचांग जाना जरूरी था।

महत्त्वाकांक्षी होने के बावजूद कन्फ्यूशियस अपने सिद्धांतों के साथ किसी तरह का समझौता नहीं करना चाहते थे। वे कठोर मेहनत और ईमानदारी से सफलता प्राप्त करना चाहते थे। सदाचार संबंधी उनके सिद्धांतों को उनके पोते जिसी ने 'कन्फ्यूशियस के पाँच सिद्धांत' शीर्षक से वर्णित किया था, जो इस प्रकार थे—सदाचार, सही बरताव, अनुष्ठानों का पालन, विवेक और ज्ञान तथा निष्पक्ष निर्णय।

एक कहावत है—'इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या जानते हैं, बल्कि इस बात से फर्क पड़ता है कि आप किसे जानते हैं।'

कन्फ्यूशियस का एक सच्चा मित्र प्रभावशाली वर्ग से संबंध रखता था, लेकिन उन्होंने कभी उस मित्र से कोई सहायता नहीं माँगी थी। जिस समय वे हताश होकर सोच रहे थे कि उनका उत्थान संभव नहीं था, उसी समय अप्रत्याशित रूप से उनका वह प्रभावशाली मित्र उनकी सहायता करने के लिए आगे आया था।

अब कन्फ्यूशियस का भाग्य-परिवर्तन होने वाला था।

❑

लोचांग की यात्रा

जीवन के इस अहम मोड़ पर कन्फ्यूशियस की मदद करने के लिए जो मित्र सामने आया (कन्फ्यूशियस महसूस कर रहे थे कि 30 साल की उम्र में भी अगर वे पशु संपत्ति के प्रभारी बने रहेंगे तो जीवन भर उन्हें वही काम करना होगा), उसका नाम नांगोंग चिंग्सू था, जो विद्यालय में उनका सहपाठी रह चुका था और जो सामंत मेंग का सबसे छोटा पुत्र था। लगता है कि बाद के वर्षों में भी दोनों के बीच संपर्क बना रहा था। यही वजह थी कि जीवन के इस मोड़ पर कन्फ्यूशियस के लिए वह मददगार बनकर सामने आ गया था। कन्फ्यूशियस की तरह नांगोंग को भी अनुष्ठानों से गहरा लगाव था और शायद दोनों पहले भी लू की पहाड़ी पर स्थित मंदिर में जाकर अनुष्ठानों का जायजा ले चुके थे।

एक बात निश्चित है कि नांगोंग जिंगसू एक दिन मवेशी घर के बगल में स्थित कन्फ्यूशियस के कार्यालय में पहुँच गया और उसने कन्फ्यूशियस को बताया कि उसके पिता उसे प्राचीन झोउ की राजधानी लोचांग की यात्रा पर भेजने के लिए तैयार हो गए हैं। वह वहाँ पहुँचकर अनुष्ठान संबंधी नए विचारों का अध्ययन करना चाहता है। नांगोंग ने अपने पिता सामंत मेंग को समझाया था कि उनके परिवार में किसी एक सदस्य को अनुष्ठान विशेषज्ञ बनना जरूरी था। उसे छोड़कर उसके भाइयों के मन में अनुष्ठानों के प्रति किसी तरह की दिलचस्पी नहीं थी। सामंत मेंग सत्ता-लोलुप व्यक्ति था और उसने अपने छोटे पुत्र के इस तर्क को सही मान लिया कि अनुष्ठान की सटीक जानकारी के बिना उसे सार्वजनिक जीवन में शर्मिंदगी का सामना करना पड़ सकता था।

यह खबर सुनकर सबसे पहले कन्फ्यूशियस के दिल में हूक सी उठी होगी—ऐसी ही तमन्ना उनकी भी थी, लोचांग की यात्रा किसी तीर्थयात्रा के बराबर ही थी। जिंगसू वहाँ जा रहा था, यह जानकर उन्होंने उसे शुभकामनाएँ दीं। मन-ही-मन उन्होंने सोचा होगा कि अमीर और ताकतवर आदमी अपनी सारी इच्छाएँ पूरी कर सकता है। फीकी मुसकराहट के साथ उन्होंने अपने मित्र को मुबारकबाद दी होगी। तभी नांगोंग जिंगसू ने मानो धमाका कर दिया, ''तुमने मेरी बात नहीं समझी; मेरे भाई, तुम भी मेरे साथ चल रहे हो।''

शुरू में कन्फ्यूशियस को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ, फिर जब उन्हें विश्वास हो गया तब भी उन्होंने यही सोचा कि वहाँ एक विशाल काफिले का हिस्सा बनकर जाना पड़ेगा। उस जमाने में जब कोई सामंत का बेटा राजधानी में आधिकारिक दौरे पर जाता था तो उसके साथ परिवार के वरिष्ठ सदस्य, विद्वान्, कर्मचारी और सेवकगण भी जाते थे। किंतु जिंगसू ने स्पष्ट किया कि वह केवल कन्फ्यूशियस साथ यात्रा पर जाने वाला था और उसके पीछे-पीछे कोई काफिला नहीं चलने वाला था। उनके साथ गिने-चुने सेवक और वाहन को हाँकनेवाला चालक जाने वाले थे। उसने यात्रा करने के लिए अपने पिता से बैलगाड़ी माँग ली थी।

उस युग के रिवाज को देखते हुए जिंगसू की यह बात सुनकर कन्फ्यूशियस को अचरज हुआ होगा। क्योंकि सामंत के पुत्र हमेशा काफिले के साथ सफर करते थे। ताऊषेवादी पांडुलिपियों में भी इस बात का उल्लेख मिलता है कि कन्फ्यूशियस जिंगसू के साथ सामान्य विद्यार्थी की तरह लोचांग पहुँचे थे। असल में, जिंगसू को प्रदर्शनप्रियता पसंद नहीं थी। वह स्वतंत्र विचारोंवाला युवक था और सबसे छोटा पुत्र होने के नाते उसे पिता का स्नेह भी अधिक प्राप्त था। जिंगसू को लगता था कि वह अपनी मरजी से कुछ भी कर सकता था और उसने अपनी सामाजिक हैसियत के जरिए कमजोर हैसियतवाले मित्र कन्फ्यूशियस की सहायता जीवन भर की।

इस खुशखबरी को सुनकर कन्फ्यूशियस की क्या प्रतिक्रिया सामने आई थी, इस बात की जानकारी उपलब्ध नहीं

है। इतना तो तय है कि उन्होंने अपनी रेशमी टोपी हवा में उछाल दी होगी, चेहरे पर खुशी की चमक आ गई होगी और उन्होंने मवेशी के चारे के ढेर पर घूँसा मारकर अपनी खुशी का इजहार किया होगा।

दोनों ने वसंत के मौसम में एक दिन बैलगाड़ी में सवार होकर अपनी यात्रा शुरू की। बैलगाड़ी लू से पश्चिम दिशा की तरफ बढ़ती जा रही थी। पिछले हिस्से में नरम बिछौने पर आराम से लेटकर दोनों मित्र तरह-तरह की बातें कर रहे थे।

यह यात्रा किस वर्ष में की गई थी, इसकी निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं है। अनुमान लगाया जाता है कि यह यात्रा ई.पू. 524 में की गई थी। उस समय कन्फ्यूशियस और नांगोंग जिंगसू की उम्र 27 वर्ष की थी। यह यात्रा निश्चित रूप से ई.पू. 521 से एक-दो वर्ष पहले ही की गई थी, क्योंकि इसी वर्ष झोउ की राजधानी लोचांग और कन्फ्यूशियस के गृहनगर लू के बीच सारा संपर्क समाप्त हो गया था, क्योंकि लोचांग में गृह युद्ध छिड़ गया था और कई पीढ़ियों तक खून-खराबे का सिलसिला चलता ही रहा था।

यात्रा के शुरुआती हिस्से में दोनों मित्र आराम फरमा रहे थे। हवा के झोंके के साथ हिचकोले खाते हुए पश्चिम दिशा में बढ़ते जाना उन्हें अच्छा लग रहा था। उन्होंने सोचा भी नहीं था कि वे झाउ की राजधानी की यात्रा करने वाले लू के आखिरी यात्री थे, क्योंकि जल्दी ही झोउ की राजधानी का प्राचीन स्वरूप ध्वस्त होने वाला था।

लू से लोचांग तक की दूरी पंद्रह दिनों में पूरी की गई होगी। दोनों मित्र रात के वक्त बैलगाड़ी के अंदर ही सो जाते थे और सितारों से जगमगाते आसमान के नीचे रात्रि के भोजन का आनंद उठाते थे। हालाँकि गंभीर उद्देश्य को लेकर दोनों यात्रा पर निकले थे, किंतु दोनों को इस यात्रा में छुट्टियों का आनंद भी प्राप्त हो रहा था, क्योंकि मुद्दत के बाद उन्हें अपने-अपने दायित्व से मुक्त होकर फुरसत की घड़ियाँ गुजारने का समय मिला था। नांगोंग अपने पिता की रियासत के वित्तीय मामलों की देखरेख करता था।

लोचांग पहुँचने के बाद शुरू के कुछ दिनों तक दोनों प्रतिदिन विशाल मंदिर में जाते थे। वहाँ पहुँचकर कन्फ्यूशियस अनगिनत सवाल पूछते थे और जरूरी बातें लिख लेते थे। वे सबकुछ जान लेना चाहते थे। वे सभी अनुष्ठानों की बारीकियों को सीखना चाहते थे। अनवरत शोध करते रहने की उनकी आदत उस समय भी बनी रही थी, जब वे जीते-जी किंवदंती बन चुके थे। वैसी स्थिति में भी वे अपने आपको एक जिज्ञासु छात्र ही समझते थे।

''जब कन्फ्यूशियस ने विशाल मंदिर में प्रवेश किया तो उन्होंने हर चीज के बारे में जानना चाहा। किसी ने कहा—कौन कहता है कि कन्फ्यूशियस अनुष्ठानों का विशेषज्ञ है? वह विशाल मंदिर में गया और हर चीज के बारे में सवाल पूछने लगा।

यह सुनकर कन्फ्यूशियस ने कहा—यही तो अनुष्ठान है।''

—एनालेक्ट्स 3:15

नगर के सांस्कृतिक आकर्षण केंद्रों में घूमते हुए कन्फ्यूशियस और नांगोंग ने जरूर दर्शन के क्षेत्र में उभर रही विचारधारा ताओवाद के चर्चे सुने होंगे। इससे पहले कन्फ्यूशियस ने ताओ दर्शन के बारे में नहीं सुना था। झोउ की राजधानी में ही उन्हें पता चला कि ताओवादी सभ्यता के पतन का विरोध कर रहे थे और जीवन की एक नई राह सिखा रहे थे। इस दर्शन ने जरूर उनका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया था।

वे किसी ताओवादी से मिलकर अपनी जिज्ञासा शांत करना चाहते थे। एक दिन उन्हें यह मौका मिल गया, जब वे झोउ पुस्तकालय में किसी कार्य से गए। अगर वे सोच रहे थे कि ताओवादी उनकी तरह ही जीवन-मूल्यों के बारे में चिंतित थे तो उन्हें जल्द ही निराशा हाथ लगने वाली थी।

❑

दो विचारधाराएँ

ताओवादी लेखक जुआंगजी के अनुसार, कन्फ्यूशियस जब लोचांग में स्थित पुस्तकालय में गए तो इत्तफाक से उनकी मुलाकात ताओवादियों से हो गई।

''कन्फ्यूशियस अपनी कुछ रचनाएँ पुस्तकालय में जमा करने गए तो उनसे कहा गया—इस पुस्तकालय के प्रभारी लाओत्से थे, जो अब कार्य-मुक्त हो चुके हैं और अपने घर में रहते हैं। अगर आप अपनी रचनाएँ यहाँ जमा करना चाहते हैं तो उनसे मिलकर मदद क्यों नहीं माँग लेते?''

—बुक ऑफ जुआंगजी 13:7

झोउ राजधानी में ताओवादियों के साथ कन्फ्यूशियस की मुलाकात के कई प्रमाण मिलते हैं। जहाँ कन्फ्यूशियसवादी साहित्य में इस प्रसंग का उल्लेख मिलता है, वहीं ताओवादी साहित्य में भी इस प्रसंग का उल्लेख मिलता है। किंतु ताओवादियों ने अपने नजरिए से इस प्रसंग का उल्लेख किया है।

जुआंगजी ने कन्फ्यूशियस के प्रति तिरस्कारपूर्ण रवैया अपनाते हुए लेखन किया है। उसी तरह कन्फ्यूशियस के शिष्यों ने जिस तरह प्रसंग का वर्णन किया है, वह भी विश्वसनीय नहीं है। परंपरागत रूप से कहा जाता रहा है कि कन्फ्यूशियस ने लाओत्से के सान्निध्य में अनुष्ठान की शिक्षा ग्रहण की; किंतु यह दो कारणों से असंभव प्रतीत होता है। पहला, अब ज्यादातर विद्वान् इस बात से सहमत हैं कि लाओत्से नामक किसी व्यक्ति का अस्तित्व नहीं था और ताओवादियों ने इस नाम की कल्पना अपने प्रथम ग्रंथ 'जीवन की राह' के सर्जक के रूप में की। इस ग्रंथ की रचना कई लोगों ने मिलकर की थी और 'लाओत्से' का अर्थ 'प्राचीन गुरु' होता है। ताओवादी साहित्य के सिवाय तत्कालीन साहित्य में कहीं भी इस नाम का उल्लेख नहीं मिलता; जबकि कन्फ्यूशियस का उल्लेख विभिन्न साहित्यों में मिलता है। आज तक किसी ने कन्फ्यूशियस के अस्तित्व पर सवालिया निशान नहीं लगाया, न ही किसी ने 'एनालेक्ट्स' की सूक्तियों पर संदेह किया।

मान लिया जाए कि उस समय लोचांग में इसी नाम का कोई व्यक्ति ताओवाद का प्रचार कर रहा था तो उसके लिए यह संभव नहीं था कि वह अनुष्ठान की शिक्षा देता, क्योंकि ताओवादी हर तरह के अनुष्ठान और समारोह को नकार रहे थे। वे अपने अस्तित्व की सार्थकता के लिए मानव समाज के सभी रिवाजों को अप्रासंगिक मानते थे, इसलिए यह संभव नहीं था कि कोई ताओवादी अनुष्ठानों की शिक्षा देता।

इस तरह स्पष्ट है कि कन्फ्यूशियस ने ताओवादियों से अनुष्ठानों की शिक्षा ग्रहण नहीं की; किंतु इतना निश्चित है कि उनकी मुलाकात ताओवादियों से जरूर हुई थी।

जीवन में बाद के वर्षों में कन्फ्यूशियस कभी भी ताओवादी दर्शन की तरफ आकर्षित नहीं हुए। हालाँकि उनके समय में काफी लोग ताओ मत को अपना रहे थे और घर-परिवार छोड़कर जंगलों व पहाड़ों में रहने के लिए जा रहे थे; लेकिन उनके मन में कभी भी इस तरह के वैराग्य का भाव पैदा नहीं हुआ। हालाँकि जुआंगजी ने अपनी पुस्तक में आरोप लगाया है कि जीवन के अंतिम वर्षों में कन्फ्यूशियस वैरागी बन गए। उन्होंने शिष्यों का साथ छोड़कर एकांत में रहना पसंद किया। किंतु ये पूरी तरह मनगढ़ंत बातें हैं।

लोचांग में कन्फ्यूशियस की पहली मुलाकात जब ताओवादियों से हुई थी, उसी समय दो परस्पर विरोधी विचारधाराओं की जंग का सूत्रपात हो गया था। यह जंग कई सदियों तक चलती रही।

लोचांग में ताओवादियों से मिलने के बाद कन्फ्यूशियस को अहसास हो गया था कि बुनियादी रूप से उनका

रास्ता अलग था और उनकी मान्यताएँ ताओ दर्शन से बिलकुल मिलती-जुलती नहीं थीं। 'एनालेक्ट्स' में संगृहीत किसी भी सूक्ति पर ताओवाद के प्रभाव को रेखांकित नहीं किया जा सकता। ताओवादियों से उन्होंने केवल एक शब्द 'ताओ' लिया था, जिसका प्रयोग उन्होंने 'सदाचार का मार्ग' बताने के लिए किया था।

आखिरकार 'कन्फ्यूशियस का मार्ग' चीन पर छा गया; मगर धर्म के रूप में ताओवाद आज भी वहाँ लोकप्रिय है और माना जाता है कि दुनिया भर में ताओवाद के लगभग सवा करोड़ अनुयायी मौजूद हैं। दर्शन के रूप में इसे अपार लोकप्रियता मिलती रही है। 'वे ऑफ बीइंग' नामक पुस्तक का दुनिया भर की भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

चीन में कन्फ्यूशियसवाद और ताओवाद के बीच संघर्ष इतना गंभीर होता गया कि लोगों को स्पष्ट रूप से अपने समर्थन के बारे में बताना पड़ता था कि वे किस दर्शन के साथ थे, कन्फ्यूशियस की मृत्यु के बाद पहली शताब्दी में बहुत सारे लोग ऐसे थे जो बिना किसी असमंजस के दोनों ही दर्शन से को अपना लेते थे। उस युग की समाधियों में दोनों ही दर्शन संबंधित पांडुलिपियाँ एक साथ प्राप्त की गई हैं, जो प्रमाणित करती हैं कि लोग दोनों दर्शन को अपने लिए उपयोगी मानते रहे थे। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के एक शिक्षक की समाधि से पुरातत्त्वविदों ने इस तरह की पांडुलिपियाँ प्राप्त की हैं। वह शिक्षक शासक चू का अध्यापक था। उसने अपने पाठ्यक्रम में कन्फ्यूशियस और लाओत्से को एक साथ शामिल किया था।

ऐसा लगता है कि दोनों विचारधाराओं के बीच तीखा संघर्ष काफी बाद में तब शुरू हुआ, जब दोनों दर्शन के समर्थक राजनीतिक शक्ति पर काबिज होने की कोशिश कर रहे थे।

वर्तमान युग में सारी शिकायतें दूर हो चुकी हैं। अब दोनों ही विचारधाराएँ परस्पर विरोधी नहीं प्रतीत होतीं, बल्कि दोनों एक-दूसरे की पूरक लगती हैं, क्योंकि दोनों ही विचारधाराएँ मानवता को भिन्न-भिन्न बातें सिखाती हैं।

ताओवाद ने कभी सामाजिक संबंधों के बारे में चर्चा नहीं की। वहीं कन्फ्यूशियसवाद ने ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में कभी चर्चा नहीं की। व्यवसायी, विद्यार्थी और राजनेताओं को 'एनालेक्ट्स' से प्रेरणा मिलती रही है। वहीं 'वे ऑफ बीइंग' क्वांटम भौतिकी को समझने में सहायक सिद्ध हो सकती है और इसे स्टीफन हॉकिंग्स की पुस्तक 'ए ब्रीफ हिस्टरी ऑफ टाइम' के साथ-साथ पढ़ा जा सकता है।

''इस ब्रह्मांड में प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति अस्तित्व में हुई। अस्तित्व का जन्म अस्तित्व-विहीनता से हुआ। रहस्य के भीतर रहस्य छिपा हुआ है।''

—ताओ तेजिंग

अंत में दोनों विचारधाराएँ परस्पर विरोधी नहीं प्रतीत होतीं। मानव जाति को दोनों की जरूरत है। जब हम रहस्य के भीतर रहस्य की खोज करना चाहते हैं और ब्रह्मांड के गूढ़ अर्थ को समझना चाहते हैं, तब ताओवाद हमें राह दिखाता है। वहीं हमें कन्फ्यूशियस के मार्ग की भी सख्त आवश्यकता है, जो हमें अहंकार से मुक्त होकर विनम्र होना सिखाता है। ये दोनों विचारधाराएँ ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी की अनमोल देन हैं, जिस विलक्षण शताब्दी में इस धरती पर गौतम बुद्ध, सुकरात और प्लेटो जैसे महामानवों ने जन्म लिया था।

❑

अध्यापन की शुरुआत

झोउ की राजधानी से बैलगाड़ी में सवार होकर वापस लौटते हुए कन्फ्यूशियस को जरूर वहाँ बिताए गए लमहों की याद आ रही थी। वहाँ वे कुछ हफ्तों तक प्राचीन ज्ञान और दर्शन का अन्वेषण करते रहे थे। तब उन्होंने महसूस किया था कि उनका जन्म इसी तरह अन्वेषण में रमे रहने के लिए नहीं हुआ था। अब उन्हें फिर मवेशियों की दुनिया में लौट जाना था। यह सोचकर उन्हें जरूर मायूसी हुई होगी।

नांगोंग जिंगसू ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा कि चिंतित होने की जरूरत नहीं है। उन्होंने अपनी यात्रा के उद्देश्य को पूरा कर लिया था, यानी उन्होंने झोउ के विशाल मंदिर में अनुष्ठानों का अध्ययन पूरा कर लिया था। अब कन्फ्यूशियस अपने नाम के साथ 'जी' (गुरु) का प्रयोग कर सकते थे। अब उनका नाम होगा 'कोंग जी', जो प्रभावशाली रहेगा। नांगोंग ने उनसे वादा किया कि लू पहुँचने के बाद वह उनके लिए कुछ विद्यार्थियों का प्रबंध कर देगा। यह सुनकर कन्फ्यूशियस के चेहरे पर कृतज्ञता का भाव आया; किंतु उन्हें यकीन नहीं हुआ कि उन्हें अध्यापन करने का मौका मिल पाएगा।

कन्फ्यूशियस महसूस कर रहे थे कि लोचांग में रहकर उन्होंने जिस तरह अनुष्ठानों का अध्ययन किया था, उस वजह से उन्हें अध्यापन का मनपसंद पेशा मिल सकता था; किंतु सबसे अधिक संतुष्टि उनके मन में इस बात को लेकर थी कि झोउ की राजधानी में रहते हुए उन्हें जीवन का एक निश्चित उद्देश्य निर्धारित करने का अवसर मिल गया था।

वे तीस बरस के हो रहे थे। अपने आसपास नजर दौड़ाते हुए वे देख रहे थे कि समाज का पतन हो रहा था।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''ऊँचे पदों पर आसीन लोग संकीर्ण मानसिकतावाले हैं। कार्य-व्यापार सम्मान के बगैर हो रहा है, शोक के बगैर अंत्येष्टियाँ हो रही हैं। मैं इन सबकी तरफ चुपचाप होकर कैसे देखता रह सकता हूँ?''

—एनालेक्ट्स 3:26

इस तरह के गलत आचरण को देखकर कन्फ्यूशियस के मन में विचार पैदा हुआ कि सही राह पर चलनेवाले लोगों को संकल्प लेना चाहिए और मानवीय मूल्यों की नए सिरे से स्थापना होनी चाहिए। किसी-न-किसी को राह दिखाने का बीड़ा उठाना ही पड़ेगा। ताओवादियों से वार्त्तालाप करने के बाद वे समझ गए थे कि ताओवाद से लोगों का कल्याण नहीं होने वाला था। उन्होंने संकल्प लिया कि समाज को राह दिखाने की भूमिका वे खुद ही निभाएँगे।

समाज-परिवर्तन का संकल्प मन में लेकर कन्फ्यूशियस झोउ की राजधानी से लौटकर सीधे पशु संपत्ति के प्रभारी का दायित्व निभाने के लिए चले गए। जल्द ही नांगोंग जिंगसू खुशखबरी लेकर उनके पास पहुँच गया। उसने बताया कि उसके भाइयों के लिए अनुष्ठानों के शिक्षक की आवश्यकता थी और शिक्षक की भूमिका कन्फ्यूशियस को निभानी थी। जिंगसू के एक भाई का नाम मेंग यी था, जो विद्यालय में नांगोंग और कन्फ्यूशियस से दो वर्ष आगे की कक्षा में था। मेंग यी अपने पिता का उत्तराधिकारी था। ऐसा प्रतीत होता है कि नांगोंग भी कन्फ्यूशियस की तरह अपने पिता की किसी उपपत्नी के गर्भ से पैदा हुआ था और जीवन भर वह अपनी मरजी से अलग-अलग कार्य करता रहा। उसने अपने भविष्य को सँवारने की जगह अपने मित्र कन्फ्यूशियस को आगे बढ़ाने पर विशेष जोर दिया, क्योंकि वह आगे चलकर 'सामंत मेंग' का पद नहीं प्राप्त करने वाला था।

अध्यापन के लिए मेंग महल में जाने के लिए कन्फ्यूशियस को अवकाश मिलने लगा। शुरू-शुरू में सामंत जी ने अपने कर्मचारी को अस्थायी तौर पर अवकाश देने से मना किया होगा, मगर बाद में वह तैयार हो गया होगा, चूँकि

वह सामंत मेंग के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाकर रखना चाहता था। वह अवकाश के बावजूद कन्फ्यूशियस को पूरा वेतन देने के लिए भी तैयार हो गया था।

उस समय लू प्रांत में तीन ताकतवर सामंत परिवार थे—जी, मेंग और शूरि परिवार। सभी परिवार के मुखिया अपनी ताकत बढ़ाने और लू का शासक बनने का सपना देखते थे; मगर उनमें से किसी की भी हैसियत ऐसी नहीं थी कि वह अपने बलबूते पर लू का शासक बन सकता था। विद्रोह करने पर कम-से-कम दो परिवारों का एकजुट होकर लड़ना जरूरी था। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर जी और मेंग परिवारों ने एक-दूसरे के साथ दोस्ताना संबंध बनाकर रखा था। सत्ता का यह समीकरण कन्फ्यूशियस के लिए लाभदायक साबित हुआ। रातोरात वे अध्यापक बन गए और उन्हें अपना मनपसंद कार्य मिल गया।

सामंत मेंग के पुत्र अपने नए अध्यापक से काफी प्रभावित हुए। कन्फ्यूशियस को केवल अनुष्ठानों की शिक्षा देनी थी; मगर अध्यापन के दौरान वे 'कविता की पुस्तक' का उद्धरण देना नहीं भूलते थे। इसके साथ ही वे इतिहास और दैनंदिन जीवन के उदाहरणों का प्रयोग करना भी नहीं भूलते थे। 'एनालेक्ट्स' में उनके शिष्यों ने उनकी अध्यापन शैली का जीवंत चित्रण किया है। कन्फ्यूशियस केवल व्याख्यान देने में विश्वास नहीं करते थे, बल्कि वे जीवंत चर्चा को प्रोत्साहित करते थे। ऐसा करते हुए वे किसी ग्रंथ के वाक्यों को आधार बनाना पसंद करते थे। इसके साथ ही लोचांग में किए गए अपने शोध का इस्तेमाल भी वे अध्यापन के दौरान करते थे। उनकी अध्यापन शैली इस कदर आकर्षक थी कि उनके दोनों शिष्यों ने अपने पिता से उनके अध्यापन की तारीफ की और इस तरह कन्फ्यूशियस ने अध्यापक के रूप में नई भूमिका की शुरुआत की।

नांगोंग जिंगसू ने कन्फ्यूशियस के लिए कुछ अन्य अमीर वर्ग के छात्रों का इंतजाम कर दिया। जिंगसू ने उन्हें आश्वस्त किया कि अब उन्हें पशु संपत्ति की देखभाल करने के लिए वापस लौटने की जरूरत नहीं होगी। विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती गई और फिर कन्फ्यूशियस को लू की राजधानी चुंगडू में शासक झाओ के परिवार में अध्यापन करने की जिम्मेदारी मिली। यह उनके लिए अपनी योग्यता सिद्ध करने का सुनहरा मौका था।

संयोग की बात थी कि जिस समय कन्फ्यूशियस लू की राजधानी में शासक झाओ के परिजन को शिक्षा दे रहे थे, उसी समय उत्तर में स्थित प्रांत क्वी का शासक जिंग राजकीय दौरे पर वहाँ पहुँच गया। लू की तुलना में क्वी की सैन्य क्षमता अधिक मजबूत थी और भौगोलिक रूप से भी क्वी का आकार बड़ा था। लू शासक को क्वी की क्षमता का डर सताता था और वह क्वी के शासक को खुश रखने की भरसक कोशिश करता था।

शासक जिंग ने बताया कि वह अनुष्ठान के नए नियमों से अवगत होने के लिए लू के दौरे पर आया था। तब शासक झाओ ने बताया कि उनके दरबार में एक योग्य शिक्षक मौजूद था, जो हाल ही में अनुष्ठानों की नई पद्धति सीखकर लोचांग से लौटा था। यह सुनकर जिंग खुश हो गया। उसे बीच-बीच में दक्षिण में स्थित चू जैसे प्रभावशाली राज्यों का दौरा करना पड़ता था और कूटनीतिक कौशल की सफलता के लिए वह अनुष्ठानों के नियमों को अच्छी तरह जान लेना चाहता था। असल में, वह इसी उद्देश्य से स्वयं लोचांग की यात्रा भी करना चाहता था; किंतु उसे सूचना मिली थी कि समूचे झोउ क्षेत्र में गृहयुद्ध की आग फैल चुकी थी। ऐसी स्थिति में लोचांग से शिक्षित होकर लौटे एक व्यक्ति से अनुष्ठानों की जानकारी लेना उसे अधिक व्यावहारिक लगा था।

कन्फ्यूशियस को महँगा वस्त्र पहनाया गया और शासक जिंग के समक्ष पेश होने के लिए कहा गया। कन्फ्यूशियस ने शासक झाओ के पारिवारिक मंदिर में शासक जिंग को अनुष्ठानों की शिक्षा दी। कन्फ्यूशियस और जिंग एक-दूसरे से अत्यंत प्रभावित हुए। सामंती परिवार में आरंभिक शिक्षा ग्रहण करने के कारण कन्फ्यूशियस सारे

शिष्टाचारों से भलीभाँति परिचित थे और उनके गरिमापूर्ण बरताव को देखकर शासक जिंग उनका मुरीद बन गया।

दिन भर अनुष्ठान के नियम सीखने के बाद शाम को संगीत का आनंद उठाया गया। दोनों को चीन का शास्त्रीय संगीत पसंद था। शासक जिंग उम्र में कन्फ्यूशियस से दस साल बड़ा था। उसने कन्फ्यूशियस से चीनी सितार बजाने के लिए कहा। बचपन में ही माँ की प्रेरणा से कन्फ्यूशियस ने चीनी सितार बजाना सीखा था।

इसी दौरान कन्फ्यूशियस ने शासक जिंग को समाज-हित के लिए अपने मन में पनप रही विचारधारा से भी अवगत कराया। बाद के वर्षों में कन्फ्यूशियस ने जिंग के साथ वार्त्तालाप करते हुए शासन और राजनीति संबंधी अनमोल सिद्धांतों का प्रतिपादन किया था।

जब अध्यापन का सत्र समाप्त हुआ तो शासक जिंग ने गद्गद होते हुए कन्फ्यूशियस को अपनी राजधानी लिंजी आने का निमंत्रण दिया। जिंग ने कहा कि कन्फ्यूशियस अपनी मरजी से कभी भी उसके दरबार में आ सकते थे।

इसी समय से एक शासक को शिक्षा देने के कारण कोंग क्यू 'कोंग फू जी' के नाम से मशहूर हो गए। अब अध्यापक के रूप में उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। अब मवेशियों की देख-रेख करने के लिए उनके लौटने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता था।

नांगोंग जिंगसू ने कन्फ्यूशियस के विद्यालय की स्थापना करने के लिए वित्त का प्रबंध किया था और संभवत: उसी ने जी परिवार से कन्फ्यूशियस को छुट्टी दिलाने के लिए बातचीत भी की थी। सामंत जी कन्फ्यूशियस को अध्यापन के लिए अपनी नौकरी से मुक्त करने के लिए तैयार हो गया था; किंतु उसने पहले की तरह उन्हें वेतन देते रहने का वादा भी किया था।

कन्फ्यूशियस ने सामंत जी से मिलकर उसे धन्यवाद कहा। उन्होंने कहा कि अध्यापक के रूप में वे सामंत वर्ग के विद्यार्थियों के साथ-साथ समाज के सभी वर्ग के विद्यार्थियों तक ज्ञान की रोशनी पहुँचाना चाहते हैं। सामंत जी को यह सुनकर अचरज हुआ, किंतु वह अपनी सहमति देने के लिए तैयार हो गया।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''शिक्षा के मामले में किसी तरह का भेदभाव नहीं होना चाहिए।''

—एनालेक्ट्स 15:39

कन्फ्यूशियस के विद्यालय के लिए नांगोंग जिंगसू ने संसाधन जुटाया। उसने अपनी आकर्षक बैलगाड़ी बैल और चालक सहित कन्फ्यूशियस को दे दी। कन्फ्यूशियस ने जीवन भर उस वाहन का इस्तेमाल किया।

कन्फ्यूशियस की कक्षा में शामिल होनेवाले कई छात्र निर्धन परिवारों से आते थे। इस तरह वे सामाजिक समानता के सिद्धांत पर अमल कर रहे थे। ज्यादातर छात्र अध्यापन के बदले अपने गुरु को न्यूनतम दक्षिणा ही दे पाते थे। कन्फ्यूशियस को सामंत जी की तरफ से वेतन के रूप में नियमित रूप से अनाज मिल रहा था। इस तरह उन्हें अपना गुजारा चलाने में किसी तरह की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ रहा था।

❑

कन्फ्यूशियस का विद्यालय

जो छात्र कन्फ्यूशियस से शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे, वे उनसे थोड़ी सी दक्षिणा के अलावा सीखने की ललक की अपेक्षा रखते थे। कन्फ्यूशियस ने कहा, ''अगर कोई छात्र जिज्ञासु नहीं है तो मैं उसे नहीं पढ़ा सकता।''

—एनालेक्ट्स 7:8

उनके मेधावी शिष्य कभी-कभी शिकायत करते थे कि वे ऐसे छात्रों को शिक्षा देने के नाम पर अपना समय खर्च करते थे, जिनके मन में सीखने की ललक तो होती थी, किंतु वे योग्य नहीं होते थे। मेधावी शिष्यों का मानना था कि उनके आचार्य को शिष्यों को चुनने के मामले में सावधानी बरतनी चाहिए थी। कन्फ्यूशियस इस बात से सहमत नहीं थे।

उन्होंने कहा, ''व्यक्ति को उसी रूप में ग्रहण करना चाहिए जिस रूप में वह आता है। सख्ती बरतने की क्या जरूरत है?''

—एनालेक्ट्स 7:29

''श्रेष्ठ व्यक्ति गुणी व्यक्तियों की कद्र करता है, किंतु सभी को स्वीकार भी करता है। मैं दूसरों को फटकार कैसे सकता हूँ?''

—एनालेक्ट्स 19:3

'एनालेक्ट्स' में उनकी शिक्षण शैली का वर्णन मिलता है, उनके शिष्यों के संस्मरण मिलते हैं। अपनी शिक्षा-प्रणाली के बारे में कन्फ्यूशियस के विचार भी मिलते हैं। पाठ्य पुस्तक के रूप में वे 'कविता की पुस्तक ', 'अनुष्ठानों की पुस्तक' और 'इतिहास की पुस्तक' का प्रयोग करते थे। वर्तमान युग की शिक्षा प्रणाली अलग थी, क्योंकि वे संगीत को एक बुनियादी विषय के रूप में बढ़ाते थे। वे दिन का समापन हमेशा सामूहिक गायन और नृत्य के साथ करते थे। वे स्वयं चीनी सितार बजाकर छात्रों को प्रोत्साहित करते थे। वे छात्रों को अलग-अलग वाद्ययंत्र बजाने के लिए प्रेरित करते थे। सामंत जी की पाठशाला में उन्होंने संगीत के प्रयोग को सीखा था और उन्हें लगता था कि व्यक्ति की शिक्षा को संगीत की सहायता से पूर्णता प्रदान की जा सकती है।

यह सच था कि कन्फ्यूशियस के कई छात्र जन्म से भद्रजन नहीं थे; किंतु वे उन्हें इस तरह प्रशिक्षित करते थे कि शिक्षा प्राप्त करने के बाद छात्र भद्रजन की श्रेणी में शामिल होने लायक बन जाते थे। कोई किसान का बेटा भी कन्फ्यूशियस के विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के बाद सामंत परिवारों की नौकरी प्राप्त कर सकता था। उस युग में कन्फ्यूशियस का पाठ्यक्रम सभी वर्ग के छात्रों को आकर्षित करता था और उनकी शिक्षा-प्रणाली कामयाब सिद्ध हो रही थी। गरीब किसानों के अलावा अमीर किसान और व्यापारीगण भी अपनी संतान को विद्यार्जन के लिए कन्फ्यूशियस के विद्यालय में भेज रहे थे। संभवत: कन्फ्यूशियस के विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करना भावी जीवन की सफलता का प्रतीक माना जाता था।

कन्फ्यूशियस केवल तथ्यों की शिक्षा नहीं देना चाहते थे। वे मस्तिष्क को उर्वर बनाने के लिए कविताओं का प्रयोग करना उपयोगी मानते थे। वे अकसर 'कविता की किताब' के किसी अंश का पाठ करने के बाद अपने व्याख्यान की शुरुआत करते थे।

वे अपने शिष्यों से कहते थे कि वे अपने गुरु से असहमत होने पर अपनी स्वतंत्र राय जाहिर कर सकते हैं। उनका मानना था कि शिष्यों को निष्क्रिय होकर गुरु के चरणों में नहीं बैठे रहना चाहिए। वे कहते थे कि शिष्य को

गुरु की प्रत्येक बात को धर्म वाक्य मानकर स्वीकार नहीं कर लेना चाहिए। अगर शिष्य को लगता है कि गुरु गलत मूल्यों की बात कर रहा है तो उसे अपनी असहमति जाहिर करनी चाहिए।

उनका शिष्य जिलू अकसर उनसे असहमत होता था और खुलकर अपना पक्ष उनके सामने रखता था। जब भी उसे लगता था कि आचार्य अपने किसी सिद्धांत के साथ समझौता करने वाले होते थे, तब वह उन्हें आगाह कर देता था और अकसर आचार्य अपने उस प्रिय शिष्य की राय को अहमियत देते थे। हालाँकि उनकी कक्षाएँ जीवंत और रोचक होती थीं; किंतु वे इस बात पर जोर देते थे कि छात्र को अपना पाठ अच्छी तरह याद रखना चाहिए। उनका कहना था कि जब तक छात्र अपने विषय का जानकार नहीं बनेगा, तब तक उसके भीतर नए और दिलचस्प विचारों का पनप पाना संभव नहीं होगा। वे मानते थे कि कठोर परिश्रम के साथ अध्ययन करना ही पर्याप्त नहीं है। जो पाठ वे पढ़ रहे हैं, उस पर मनन करना भी उतना ही जरूरी है—

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''अध्ययन करना और मनन नहीं करना समय की बरबादी है। मनन करना और अध्ययन नहीं करना खतरनाक है।''

—एनालेक्ट्स 2:15

कन्फ्यूशियस मानते थे कि जो श्रेष्ठ गुरु होता है, वह अपनी समस्त ज्ञान-संपदा अपने शिष्यों के बीच वितरित कर देता है।

कन्फ्यूशियस ने अपने शिष्यों से कहा, ''मेरे बच्चो, क्या तुम समझते हो कि मैं तुम लोगों से कुछ छिपाने की कोशिश कर रहा हूँ? ऐसा कुछ नहीं है, जिसे मैं तुम लोगों से छिपाने की कोशिश करूँ।''

—एनालेक्ट्स 7:24

कन्फ्यूशियस इसी तरह सफलतापूर्वक प्रसन्नता के वातावरण में चार वर्षों तक अध्यापन करते रहे। प्रथम सत्र के विद्यार्थियों को नौकरियाँ मिल गईं, वहीं प्रति वर्ष छात्रों की संख्या बढ़ती चली गई। उन्हें छात्रों से दक्षिणा मिल रही थी, वहीं सामंत जी की तरफ से वेतन भी मिल रहा था। उनका विद्यालय समूचे लू प्रांत में मशहूर हो गया था। विद्यालय की स्थापना करने में मदद करनेवाले उनके मित्र नांगोंग जिंगसू ने भी उनके विद्यालय में छात्र के रूप में दाखिला ले लिया था।

कन्फ्यूशियस के मन में अभी भी अध्यापक के साथ ही किसी बड़े सरकारी पद पर कार्य करने की इच्छा बनी हुई थी। राज्य का प्रभावशाली तबका उनकी इज्जत करने लगा था और उन्हें लगने लगा था कि जल्द ही उनकी इच्छा पूरी होने वाली थी। किं तु वे इस बात को भी महसूस कर रहे थे कि वे जिस सरकार की सेवा करना चाहते थे, वह सरकार कभी भी बिखर सकती थी और लू में कभी भी वर्चस्व की लड़ाई छिड़ सकती थी।

सामंत जी ने उसी दौरान ऐलान कर दिया कि वह लू के विशाल मंदिर में अनुष्ठान संपन्न कर अपनी हैसियत का परिचय देना चाहता था। इस तरह का अनुष्ठान करने का अधिकार परंपरा के तहत केवल लू के शासक को ही प्राप्त था।

कन्फ्यूशियस भाँप गए कि सत्ता-संघर्ष के चलते लू में गृह-युद्ध की नौबत आ सकती थी। उनकी आशंका सच साबित हुई थी। ईसा पूर्व 517 में एक दिन, जब कन्फ्यूशियस की उम्र चौंतीस साल की थी, विचलित कर देनवाली खबर के साथ उनकी कक्षा बाधित हो गई थी, सामंत जी ने बगावत कर दी थी। चारों तरफ सैनिक नजर आ रहे थे। राजधानी के कुछ हिस्सों में आग लगा दी गई थी और अफवाह फैल गई थी कि हिंसक मुठभेड़ के दौरान शासक झाओ की मौत हो गई थी। कन्फ्यूशियस ने मामले की पूरी जानकारी लेने के लिए उस दिन कक्षा स्थगित कर दी

थी।

उस दिन जो कक्षा स्थगित हुई, वह अगले सात वर्षों तक स्थगित ही रही।

❑

आत्म-निर्वासन

कन्फ्यूशियस के कई शिष्य सामंत जी की नौकरी कर रहे थे, इसलिए उन्हें सत्ता-संघर्ष की सारी सूचनाएँ आसानी से मिल गईं। सामंत जी ने प्रधानमंत्री का पद हथिया लिया था। यह पद शासक झाओ के बाद दूसरा सबसे अहम पद था; किंतु सामंत जी ने शासक झाओ को महत्त्वहीन बनाकर सारी सत्ता अपने हाथ में ले ली थी। सामंत जी कन्फ्यूशियस के प्रायोजक और मददगार की भूमिका निभाता था। सामंत जी शासक झाओ के सारे अधिकार छीन लेना चाहता था। उसने इस तरह के आदेश जारी किए, जिससे उसका परिवार और मेंग परिवार जनता से सीधे लगान की वसूली कर सकते थे। अपनी सत्ता को बचाने की आखिरी कोशिश करते हुए शासक झाओ ने सामंत जी को पद से हटा दिया और गिरफ्तार करवा दिया।

यह सूचना पाते ही जी, मेंग और शू परिवारों की सामंती सेना ने राजधानी की तरफ कूच कर दिया। इन सामंत परिवारों का उद्देश्य था सामंत जी को रिहा करवाना और शासक झाओ से छुटकारा पाना। वे उसे मार डालना चाहते थे।

बगावत की जैसी योजना बनाई गई थी, वैसा हो नहीं पाया। उन्हें सामंत जी को रिहा करवाने में सफलता मिल गई; किंतु जब सड़कों से लाशें उठाई गईं तो पता चला कि शासक झाओ भाग चुका था। सामंत परिवारों ने एक कठपुतली शासक को गद्दी पर बिठाने की योजना बनाई थी, जो वर्तमान हालात में संभव नहीं हो सकता था। शासक झाओ के जीते-जी किसी और को शासक बनाने पर पड़ोसी राज्यों को हमला करने का बहाना मिल सकता था। हालाँकि हमले की आशंका अभी भी बनी हुई थी, किंतु खतरे को टालने के लिए सामंतों ने झाओ को सांकेतिक शासक बनाने का फैसला किया था और अपने हिसाब से लू का शासन चलाने की योजना बनाई थी। इस बीच झाओ अगर लू की सीमा में कदम रखता तो उसकी मौत निश्चित थी। सामंतों ने सुना था कि झाओ उत्तर दिशा की ओर जान बचाकर भाग गया था और उसे क्वी के शासक जिंग ने शरण दे दी थी, जिस जिंग को कभी कन्फ्यूशियस ने अनुष्ठानों की शिक्षा प्रदान की थी।

कन्फ्यूशियस को पहली बार जीवन का अहम निर्णय लेना था। सामंत परिवारों के साथ उनका नजदीकी रिश्ता था। एक सामंत उनका प्रायोजक और शुभचिंतक था तो दूसरा सामंत मेंग उनके सर्वश्रेष्ठ मित्र नांगोंग जिंगसू का पिता था। नए हालात में कन्फ्यूशियस का राजनीतिक भविष्य उज्ज्वल नजर आ रहा था। उन्हें पद के साथ धन की प्राप्ति भी आसानी से हो सकती थी।

लेकिन इस सुनिश्चित और सुनहरे भविष्य को अपनाने के लिए उनकी अंतरात्मा तैयार नहीं थी। उन्होंने हमेशा अपने शिष्यों को सिखाया था कि गलत राह पर चलनेवालों की सेवा नहीं करनी चाहिए। अब वही परिस्थिति स्वयं उनके सामने पैदा हो गई थी—या तो उन्हें अपने सिद्धांतों को छोड़कर सुख-सुविधाओं को गले लगाना था या उन्हें आत्मनिर्वासित होकर तकलीफों का सामना करना था। वैसी स्थिति में सामंत जी से मिलनेवाला सालाना वेतन बंद हो सकता था।

आखिरकार उन्होंने निर्णय ले लिया। अगर वे रुक जाते तो शिष्यों को दिए गए उनके उपदेशों का कोई मतलब नहीं होता। उनकी कथनी और करनी में अंतर आ जाता। उन्होंने लू छोड़कर जाने का फैसला किया। उनके शिष्यों ने उनसे रुक जाने का अनुरोध किया और कहा कि उन्हें जल्द ही कोई ऊँचा सरकारी पद मिलने वाला था।

जिलू ने कहा, ''सरकारी पद स्वीकार नहीं करना उचित नहीं होगा।''

—एनालेक्ट्स 18:7

कन्फ्यूशियस अपने निर्णय पर अटल थे। वे नहीं चाहते थे कि उनके शिष्य भी उनके साथ जाएँ। वे चाहते थे कि उनके शिष्य बिगड़ते हुए हालात को सँभालने की कोशिश करने के लिए रुक जाएँ। उन्होंने खुद जाने का निश्चय किया और शिष्यों से कहा कि चिंतित होने की जरूरत नहीं थी। वे प्राचीन नायकों की तरह पहाड़ियों में पलायन कर भूखों नहीं मरना चाहते थे, बल्कि वे शासक झाओ की तरह क्वी प्रांत में जाना चाहते थे, जहाँ के शासक जिंग ने उन्हें अपने दरबार में आने का निमंत्रण दिया था। जिन युवाओं के दिल में उन्होंने उम्मीदों का संचार किया था, उनसे विदा लेकर वे क्वी की राजधानी की तरफ आत्मनिर्वासित जीवन गुजारने के लिए रवाना हो गए।

ईसा पूर्व 517 में शीतकाल में एक दिन कन्फ्यूशियस बैलगाड़ी में सवार होकर उत्तर की दिशा में रवाना हुए थे। नांगोंग जिंगसू ने उदारता का परिचय देते हुए कन्फ्यूशियस से कहा कि वे उसकी बैलगाड़ी का जीवन-पर्यंत इस्तेमाल कर सकते हैं। जिंगसू विदा के वक्त उदास हो गया था। उसे विद्यालय के ठप हो जाने की पीड़ा भी सता रही थी, किंतु वह खुद को असहाय महसूस कर रहा था। अपने पिता से असहमत होते हुए भी उसे अपने पिता का साथ देना पड़ रहा था। दोनों दोस्तों ने फिर मिलने का वादा किया और जुदा हो गए।

दो दिन तक सफर करने के बाद जब कन्फ्यूशियस क्वी की सरहद के पास पहुँच गए तो उन्होंने रथ पर सवार कुछ राजकर्मचारियों को अपने करीब आते हुए देखा। राजकर्मचारियों ने बताया कि कन्फ्यूशियस को शाही मेहमान का दर्जा दिया गया था और वे लोग अगवानी करने के लिए आए थे।

राजा जिंग ने कन्फ्यूशियस का स्वागत धूमधाम से किया। ऐसे भव्य स्वागत की उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी।

क्वी के शासक जिंग ने कन्फ्यूशियस के स्वागत के संबंध में कहा, ''मैं उनके साथ उस तरह पेश नहीं आना चाहता जिस तरह लू का शासक जी परिवार के मुखिया के साथ पेश आता है। मैं उन्हें जी और मेंग परिवार के मुखिया से ऊपर का दर्जा प्रदान करना चाहता हूँ।''

—एनालेक्ट्स 18:3

स्वयं को सामाजिक हैसियत के लिहाज से मेंग से ऊपर पाकर कन्फ्यूशियस को किसी तरह की शिकायत करने का मौका नहीं मिला। राजा जिंग ने उन्हें रहने के लिए महल में अपना कमरा दे दिया और उन्हें व्यक्तिगत परामर्शक का पद दे दिया; हालाँकि आधिकारिक रूप से इस पद की कभी घोषणा नहीं की गई। शासक जिंग को प्रसन्नता महसूस हो रही थी कि उसका पुराना अध्यापक अब उसके दरबार की शोभा बढ़ा रहा था। पाँच साल पहले उसने कन्फ्यूशियस से वादा किया था कि जब वे उसके दरबार में अतिथि बनकर आएँगे तो वह उन्हें संगीत मंडली का कार्यक्रम दिखाएगा। उसने कलाकारों को बुलाकर कन्फ्यूशियस के सामने संगीत प्रस्तुत करने के लिए कहा। जिंग कहता था कि वे कलाकार स्वर्ग का संगीत रचने में पारंगत थे। संगीत सुनकर कन्फ्यूशियस अत्यंत प्रभावित हुए। लिंजी के शुरुआती तीन महीने उन्होंने संगीत वृंद की संगत में ही गुजार दिए। संगीत का आनंद उठाने में वे इस कदर रम जाते थे कि उन्हें खाने-पीने की सुध भी नहीं रह जाती थी।

सीमा कियान ने लिखा है—''वे क्वी के प्रमुख संगीतज्ञों के साथ संगीत की चर्चा करने लगे। उन्होंने शाओ संगीत की धुनों को गौर से सुना और उन्हें सीखा। तीन महीने तक उन्हें खाने-पीने की सुध नहीं रह गई थी।''

एक तरफ क्वी के शासक जिंग ने गर्मजोशी से उनका स्वागत किया था, दूसरी तरफ निर्वासित जीवन बिता रहे लू के शासक झाओ ने उनसे मिलने पर किसी तरह का उत्साह प्रदर्शित नहीं किया। इस बात की कोई जानकारी नहीं मिलती कि निर्वासन की अवधि में झाओ ने कन्फ्यूशियस के सामने किसी तरह का विचार व्यक्त किया।

हालाँकि सात वर्षों के बाद झाओ का वहीं देहांत हो गया। संभवत: झाओ ने उम्मीद लगा रखी थी कि उसे सत्ता वापस दिलाने के लिए क्वी का राजा जिंग लू पर हमला करेगा; किंतु संगीत में रमा रहनेवाला जिंग उसके अनुरोध को नजरअंदाज करता रहा था।

असल में शासक जिंग पुरानी शैली का शासक था (और संभवत: इसी वजह से कन्फ्यूशियस के साथ उसका मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित हो पाया था)। उसके पास एक हजार रथोंवाली सेना थी, जिस पर उसे गर्व महसूस होता था, मगर उसे युद्ध में दिलचस्पी नहीं थी और संभवत: इसी वजह से उसने कोई युद्ध नहीं किया था।

जिंग भी अपने अध्यापक की तरह गौरवशाली अतीत को पसंद करता था और जब उसका देहांत हुआ तो उसके साथ उसके एक हजार रथों और घोड़ों को भी दफनाया गया।

जिंग शासन, राजनीति, कला, अनुष्ठान आदि विषयों पर कन्फ्यूशियस की राय ले रहा था। दोनों के बीच कई वर्षों तक अर्थपूर्ण वार्त्तालाप चलता रहा। ये वार्त्तालाप ही भविष्य के लिए कालजयी सिद्धांत बन गए।

❑

घर वापसी

आत्म-निर्वासन की अवधि में कन्फ्यूशियस को किसी तरह की तकलीफ का सामना नहीं करना पड़ा था। उन्हें महल में रहने की जगह मिली थी। अध्ययन और संगीत में रमे रहने का मौका मिला था। राजा ने उन्हें अपना परामर्शक बनाया था। असल में, आत्म-निर्वासन का निर्णय लेकर कन्फ्यूशियस ने सूझ-बूझ का ही परिचय दिया था। वे किसी भी समय अपनी मरजी से लू लौटकर जा सकते थे। शासक झाओ को जान बचाकर लू से निर्वासित होना पड़ा था, वहीं अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए कन्फ्यूशियस ने आत्म-निर्वासन का फैसला किया था। उन्हें लू लौटने के लिए किसी के निमंत्रण का इंतजार नहीं करना था।

लू के सामंत परिवार किसी भी हालत में सत्ता की बागडोर उसके असली हकदार झाओ को सौंपने के लिए तैयार नहीं थे। इस तरह झाओ के निर्वासन की अवधि लंबी होती गई थी और कन्फ्यूशियस को ऐसा महसूस होने लगा था मानो वे कभी भी लू लौटकर नहीं जा पाएँगे। जब वे राजा जिंग के साथ वार्त्तालाप नहीं कर रहे होते या रथ की दौड़ का आनंद नहीं उठा रहे होते, तब क्वी के संगीतज्ञ जिपांग जी से संगीत की शिक्षा ग्रहण करते थे।

कन्फ्यूशियस यह बात अच्छी तरह समझ गए थे कि राजा जिंग भले ही उनके सिद्धांतों को गौर से सुनता था; किंतु वह शासन कार्य में उनके सिद्धांतों को लागू करने वाला नहीं था। राजा जिंग सोच रहा था कि कन्फ्यूशियस स्थायी रूप से क्वी में रहना पसंद करेंगे, इसलिए उसने उन्हें एक रियासत देने का प्रस्ताव भी दिया था, साथ ही दरबार में एक महत्त्वपूर्ण पद देने का वादा भी किया था। राज्य के सामंत इस बात को सुनकर नाराज हो गए थे और एक शिक्षक के बढ़ते प्रभाव का उन्होंने विरोध जताना शुरू कर दिया था। राजा अपने सामंतों को नाराज नहीं कर सकता था, इसलिए उसने अपने निर्णय को बदल दिया और कन्फ्यूशियस को कोई रियासत नहीं दी गई। उसने धीरे-धीरे उनसे परामर्श लेना भी छोड़ दिया।

इस तरह सुख-सुविधाएँ मौजूद रहने के बावजूद कन्फ्यूशियस अपने आपको उपेक्षित महसूस कर रहे थे। इसी दौरान लू के निर्वासित शासक झाउ का देहांत हो गया। अगर लू में सत्ता-परिवर्तन होता तो कन्फ्यूशियस के लिए लू लौटना आसान हो जाता। झाउ की जगह उसी वंश के डिंग को लू का शासक बनाया गया; किंतु वह जी परिवार की मरजी से ही संचालित हो रहा था। सामंत परिवारों को अपनी मनमानी करने का सुनहरा मौका मिल गया था। कन्फ्यूशियस इस हकीकत से अनजान थे। उन्होंने सोचा कि लू को एक वैध शासक मिल गया है, इसलिए अपने सिद्धांतों से समझौता किए बगैर वे लू लौट सकते हैं। 41 वर्ष की उम्र में कन्फ्यूशियस ईसा पूर्व 510 में लू लौट गए।

कन्फ्यूशियस सात वर्षों तक क्वी के शासक के परामर्शक की भूमिका निभाते रहे थे। अब वे लू की सरकार में कोई विशिष्ट पद पाकर अपने सिद्धांतों को शासन-प्रणाली में लागू करने का सपना देख रहे थे।

कुफू पहुँचने पर पुराने शिष्यों से उनका मिलन हुआ। जिलू और रेन्यू अभी भी जी परिवार के कर्मचारी के रूप में काम कर रहे थे। जिलू ने आचार्य को सत्ता-संघर्ष का सारा हाल सुनाया। रेन्यू अब सामंत जी के लिए सैन्य-आपूर्ति का काम देख रहा था, साथ ही किसानों से लगान की वसूली भी कर रहा था। जी सेना का सेनापति यांग हुओ था, जो कन्फ्यूशियस का हमशक्ल था, जिसने काफी साल पहले विद्यार्थियों की दावत में कन्फ्यूशियस को घुसने नहीं दिया था। सामंत जी अब काफी बूढ़ा हो चुका था, किंतु उसका अहंकार पहले जैसा ही था और लू की असली सत्ता उसके हाथों में थी। जी का बेटा जी हुआंग अपने पिता की तुलना में कमजोर और निर्णय लेने में असमर्थ था।

माना जा रहा था कि सामंत जी के मरने पर जो शून्य पैदा होने वाला था, उसकी वजह से सत्ता संघर्ष और भी तेज होने वाला था।

ये सारी बातें सुनने के बाद कन्फ्यूशियस जरूर चिंतित हुए होंगे। राजनीतिक हालात पहले से भी बदतर हो चुके थे; किंतु अब वे लू वापस आ गए थे और उन्हें यकीन था कि हालात को सुधारने की दिशा में वे कारगर कदम उठा सकते हैं।

नांगोंग जिंगसू को भी कन्फ्यूशियस के लौटने पर प्रसन्नता का अनुभव हुआ। जिंगसू के साथ रात्रिभोज में शामिल होते हुए कन्फ्यूशियस ने इच्छा जाहिर की कि वे नए शासक की सरकार में किसी अहम पद पर काम करना चाहते थे। नांगोंग ने इस सिलसिले में बातचीत करने का आश्वासन दिया। सामंत मेंग का पुत्र होने के नाते वह सीधे नए शासक से बातचीत कर सकता था। नांगोंग ने कन्फ्यूशियस को आगाह कर दिया कि उन्हें बदले हुए हालात में अधिक पाने की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। शासक डिंग को जी परिवार की मरजी से कार्य करना पड़ता था और सात साल पहले जिस तरह कन्फ्यूशियस लू को छोड़कर चले गए थे, उसके चलते जी परिवार उन्हें नापसंद करने लगा था।

कुछ दिनों के बाद नांगोंग जिंगसू नकारात्मक समाचार लेकर लौट आया। सरकारी पद केवल जी परिवार के वफादार व्यक्तियों के लिए सुरक्षित थे और वर्तमान शासक की सरकार में कन्फ्यूशियस को कोई जगह नहीं मिलने वाली थी। अब छात्रों के वसूले जानेवाले शुल्क के सहारे ही विद्यालय का संचालन करना था। पहले तो कन्फ्यूशियस कुछ हताश हुए, किंतु जल्द ही उन्होंने घोषणा कर दी कि वे नए सिरे से विद्यालय का संचालन शुरू करने वाले थे।

इस बार कन्फ्यूशियस के विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के लिए संभ्रांत वर्ग के कई छात्र आ गए। अभी भी उनसे शिक्षा प्राप्त करने का अर्थ भविष्य में जीविका सुनिश्चित करना माना जाता था। लू के तीनों सामंत परिवारों ने कहा कि वे कन्फ्यूशियस से शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्रों को रोजगार देने के लिए तैयार थे। शासक डिंग ने भी इसी आशय की घोषणा की थी। सामंत परिवारों को केवल आचार्य से परहेज था। वे आचार्य को सत्ता के गलियारे में कदम रखने की इजाजत नहीं देना चाहते थे। सामंतों को लगता था कि आचार्य अपने सिद्धांतों को जरूरत से ज्यादा अहमियत देते थे और सामंतों के अधिकारों में कटौती करने का सुझाव देते थे।

इस तरह नए सिरे से अध्यापन का सिलसिला शुरू हो गया। उनका पहला और सबसे वफादार शिष्य जिलू अब तीस वर्ष का हो चुका था। वह अपना कार्य पूरा कर तेजी से विद्यालय में पहुँच जाता था और उत्साह के साथ सवालों के जवाब देता था। एक दिन कक्षा में सामूहिक गायन समाप्त होने के बाद आचार्य ने शिष्यों से पूछा कि अगर उन्हें सत्ता मिल जाए तो वे किस तरह निर्णय लेंगे।

जिलू ने सबसे पहले जवाब दिया, ''मैं एक ऐसे छोटे राज्य का प्रमुख बनना पसंद करूँगा, जिस पर बड़े राज्यों के सैन्य आक्रमण का खतरा मँडरा रहा हो और जहाँ अकाल पड़ा हो। अगर मेरे पास सत्ता रहेगी तो मेरी जनता तीन सालों में निर्भीक बन जाएगी और अपना खयाल रखना सीख जाएगी।''

यह सुनकर कन्फ्यूशियस ने हँसते हुए कहा, ''अगर तुम्हारे शब्दों में सच्चाई नहीं होगी तो उन पर अमल करना कठिन हो जाएगा।''

—एनालेक्ट्स 14:20

उन्होंने बताया कि किसी राज्य पर शासन चलाने के लिए नियमबद्ध प्रयत्नों की आवश्यकता होगी और सदाचार

पर अमल करना जरूरी होगा।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''भले ही तुम राजा बन जाते हो, इसके बावजूद सदाचार को सीखने में एक पीढ़ी का समय लग सकता है।''

—एनालेक्ट्स 13:12

जब कन्फ्यूशियस वृक्षों की छाँव में अपने शिष्यों के साथ बैठकर ज्ञान की चर्चा करने लगे तो सरकारी पद न दिए जाने की हताशा धीरे-धीरे मिटती चली गई। उन्हें लगा कि वे दूसरों को ज्ञान बाँटने के लिए ही पैदा हुए थे।

❑

बगावत

जब सामंत जी मरणासन्न अवस्था में था तब सामंतगण, छोटे जमींदार और सैन्य अधिकारी मनमानी करने पर उतारू हो गए थे। वे लोग जी परिवार के निर्देश पर कार्य करनेवाले शासक डिंग को अपना शासक मानने के लिए तैयार नहीं थे। सामंत जी की सेना का सेनापति यांग हुओ अपनी मनमानी करने पर उतारू हो गया था।

इस तरह की घटनाओं का अर्थ कन्फ्यूशियस भली-भाँति समझ रहे थे; किंतु ऐसे हालात में उनके लिए कुछ कर पाना मुमकिन नहीं था। वे अध्यापन की तरफ ध्यान केंद्रित कर रहे थे। उनके विद्यालय की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैलती जा रही थी। इस दौरान वे लू का इतिहास तैयार करने का काम भी कर रहे थे।

ईसा पूर्व 505 में एक दिन जिलू ने आकर उन्हें बताया था कि यांग हुओ ने बगावत कर दी थी। तीनों सामंत परिवारों की सत्ता छीन ली गई थी और शासक डिंग को उसके घर में नजरबंद कर दिया गया था। इस तरह लू पर यांग हुओ की चार वर्षों तक चलनेवाली तानाशाही की शुरुआत हुई थी। इससे पहले सामंत जी का देहांत हो गया था और उनका बेटा जी हुआन नया सामंत बना था। उसे राजनीति से ज्यादा सुंदर स्त्रियों में दिलचस्पी थी। यांग हुओ ने उसे गिरफ्तार कर लिया था। मेंग और शू परिवार भी शक्तिहीन हो चुके थे। यांग हुओ ने सभी पुराने मंत्रियों को बरखास्त कर दिया था और नए सिरे से अपने मंत्रिमंडल का गठन कर रहा था। वह मंत्रिमंडल में अभिजात वर्ग के किसी सदस्य को शामिल नहीं करना चाहता था। उसने कन्फ्यूशियस को अपने मंत्रिमंडल में शामिल होने का प्रस्ताव दिया था।

कई संदेशवाहक कन्फ्यूशियस के पास यांग हुओ का संदेश लेकर आए। आचार्य ने शालीनता के साथ उनका स्वागत किया, किंतु कोई-न-कोई बहाना बनाकर उन्हें वापस भेज दिया। वे अकसर यही बहाना बनाते थे कि तबीयत ठीक नहीं होने के कारण उनके लिए सफर कर पाना संभव नहीं था। इस बार उन्हें आत्म-निर्वासित होने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि उन्हें अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं करना पड़ रहा था।

यांग हुओ ने चतुराई का परिचय देते हुए राह चलते हुए कन्फ्यूशियस से मुलाकात कर ली और मंत्रिमंडल में उन्हें शामिल करने की सहमति भी ले ली। असल में अपने राज्य में सिद्धांत आधारित शासन-प्रणाली लागू करने के लिए वे इस कदर बेकरार थे कि उन्हें एक तानाशाह की सरकार में शामिल होना गलत नहीं लग रहा था। लेकिन समूचे घटनाक्रम पर नए सिरे से विचार करने पर उन्हें अपना निर्णय गलत लगा और उन्होंने तानाशाह की सरकार में शामिल होने से इनकार कर दिया। यांग हुओ ने इसके बाद उन पर दबाव डालने का प्रयास नहीं किया।

जी परिवार की शक्ति घट चुकी थी और यह परिवार नए सिरे से कन्फ्यूशियस को सालाना अनाज की सहायता प्रदान करने लगा था। सामंत जी ने अपने बड़े पुत्र जी कांगजी को कन्फ्यूशियस के विद्यालय में पढ़ने के लिए भेज दिया था। उस समय कांगजी की उम्र पच्चीस साल की थी। बाद में वर्षों में जी कांगजी स्वयं सामंत बना और शासन कार्य चलाने के लिए वह निरंतर कन्फ्यूशियस से परामर्श लेता रहा।

यांग हुओ ने राजधानी के अलावा लू के केंद्रीय इलाके पर कब्जा कर रखा था; लेकिन राज्य के बाकी हिस्सों पर छोटे-छोटे जमींदारों ने कब्जा कायम करना शुरू कर दिया था। इनमें से एक जमींदार गोंगशान हुजाओ ने ई.पू. 501 में बेई शहर पर कब्जा कर लिया था और यांग हुओ की तरह कन्फ्यूशियस को अपनी सरकार में शामिल होने और अपना 'आदर्श राज्य' स्थापित करने के लिए आमंत्रित किया था। एक बार फिर कन्फ्यूशियस इस प्रस्ताव की तरफ आकर्षित हो गए थे; किंतु जिलू के विरोध करने पर उन्होंने उस प्रस्ताव को ठुकरा दिया था। कुछ दिनों के बाद

झोंगमू शहर पर कब्जा करनेवाले एक जमींदार ने उन्हें अपनी सरकार में शामिल होने का प्रस्ताव दिया। इस बार भी जिलू के तर्कों को सुनने के बाद कन्फ्यूशियस ने वहाँ जाने से इनकार कर दिया।

इस बीच सामंत मेंग का देहांत हो गया और नांगोंग जिंगसू का बड़ा भाई मेंग यी नया सामंत बना। हालाँकि यांग हुओ का अभी भी जी परिवार की सेना पर नियंत्रण बना हुआ था, मगर मेंग यी उसकी तानाशाही को समाप्त करने का संकल्प ले चुका था। उसने जी हुआन से संपर्क किया और शू परिवार को भी प्रतिरोध की लड़ाई के लिए तैयार कर लिया। जी हुआन ने जब अपने सैनिकों का नेतृत्व अपने हाथों में लेने का प्रयास किया तो यांग हुओ ने उसे बंदी बना लिया। मेंग यी ने सेना को साथ लेकर राजधानी पर हमला कर दिया।

युद्ध की भगदड़ के बीच जी हुआन किसी तरह जान बचाकर भाग गया। जब सेना ने यांग हुओ की पराजय को निश्चित समझ लिया तो उसने हथियार डाल दिए। जुआंगजी ने लिखा है कि यांग हुओ स्त्री के वेश में लू से जान बचाकर भागने में सफल हो पाया था। यांग हुओ ने पड़ोसी राज्य क्वी में जाकर शरण ली थी। उसी राज्य में कन्फ्यूशियस सात वर्षों तक आत्म-निर्वासित जीवन गुजार चुके थे।

लू में नजरबंद किए गए राजा डिंग को आजाद कर दिया गया था और नए सिरे से उसे सत्ता की बागडोर सौंप दी गई थी। रथ पर बिठाकर उसे सड़कों पर घुमाया गया था। उसके पीछे-पीछे सैनिक शाही पताका लेकर चल रहे थे। पूरे राज्य में जश्न का आयोजन किया गया था और अगले दिन राजा ने घोषणा की थी कि वह नए मंत्रिमंडल का गठन करने वाला था।

यांग हुओ की तानाशाही खत्म होने पर तीनों सामंत परिवार जश्न मना रहे थे। उन्हें लग रहा था कि अब स्थिति पहले की तरह सामान्य हो जाएगी। उन्हें लग रहा था कि राजा पहले की तरह कठपुतली बनकर गद्दी पर बैठा रहेगा और किसानों से लगान वसूली का काम वे धड़ल्ले के साथ करते रहेंगे। लेकिन जैसा उन्होंने सोचा था, वैसा हुआ नहीं। चार वर्षों तक कैदी का जीवन गुजारनेवाला राजा डिंग अपनी भूमिका और कर्तव्य के बारे में काफी चिंतन-मनन करता रहा था। अब उसने दृढ़ निश्चय किया था कि वह किसी के लिए कठपुतली शासक की भूमिका नहीं निभाएगा। उसने अपनी सरकार में बिलकुल नए चेहरों को शामिल करने का फैसला किया। हालाँकि जी हुआन को एक बार फिर प्रधानमंत्री बनाया गया; किंतु कई ऊँचे पदों पर ऐसे नए लोगों को नियुक्त किया गया, जो सभ्रांत वर्ग के सदस्य नहीं थे। शासक डिंग ने मंत्रियों का चयन करते हुए ऐसा संतुलन बनाने का प्रयास किया था, जिससे सामंत परिवार मनमानी न कर सकें। डिंग का मानना था कि सामंतों की मनमानी की वजह से ही राज्य में इतनी सारी समस्याएँ पैदा हुई थीं। शासक डिंग अब सही अर्थों में लू के शासक की भूमिका निभाने के लिए तैयार हो गया था।

एक बार फिर एक संदेशवाहक विद्यालय के दरवाजे पर पहुँचा था। उसके पास एक शाही पत्र था, जिस पर राजा डिंग के हस्ताक्षर थे। कन्फ्यूशियस को लू के केंद्रीय क्षेत्र चुंगडू का प्रशासक बनने का प्रस्ताव दिया गया था। उस इलाके में राजधानी भी शामिल थी। जिलू ने जब पत्र देखा तो उसके चेहरे पर भाव आया—क्या सिर्फ इतना ही? उसका मानना था कि उसके आचार्य के पास प्रधानमंत्री बनने लायक योग्यता थी। लेकिन कन्फ्यूशियस ने हामी भरते हुए जिलू को बताया कि सत्ता को दूर से देखते रहने की अपेक्षा किसी भी रूप में उसका अंग बनकर जनता के लिए ठोस योगदान कर पाना संभव हो सकता है।

कन्फ्यूशियस ने कहा, ''अगर तुम्हारे पास कोई ऊँचा सरकारी पद नहीं होगा तो तुम सरकार की नीतियों को प्रभावित नहीं कर पाओगे।''

—एनालेक्ट्स 8:14

उन्होंने जिलू के कंधे को थपथपाते हुए धीरज रखने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि एक दिन ऐसा आएगा, जब वे सरकार का नेतृत्व करेंगे और उनके शिष्य मंत्री की भूमिका निभाएँगे। कन्फ्यूशियस ने तत्काल प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए एक पत्र राजा को भेज दिया। उन्होंने संदेश भेजा कि वे जल्द-से-जल्द दरबार में उपस्थित हो जाएँगे।

आखिरकार कन्फ्यूशियस को शाही दावत में शिरकत करने के लिए आमंत्रित किया गया। इसके लिए उन्हें काफी इंतजार करना पड़ा। अब उनकी उम्र इक्यावन साल की हो चुकी थी; मगर इस बार कोई उनके सामने का दरवाजा बंद नहीं करने वाला था।

❑